अय्यूब

1 ऊज़ देश में अय्यूब नाम का एक आदमी
रहा करता था। वह ईमानदार और सच
बोलने वाला था। वह गलत बातों से दूर
रहता था और प्रभु की इज्ज़त किया करता
था। 2 उसके सात बेटे और तीन बेटियाँ
थी। 3 उसके पास सात हज़ार भेड़-बकरियाँ,
तीन हज़ार ऊँट, पाँच सौ जोड़ी बैल, पाँच
सौ गदहियाँ और बहुत सी दास-दासियाँ
थीं। पूरब के इलाके में वह सब से ज़्यादा
दौलतमन्द था। 4 बारी-बारी उसके बेटे एक
दूसरे के घर में खाना खाने आया करते थे।
उनकी बहनें भी इस खाने पर आया करती
थीं। 5 दावत के दिन पूरे हो जाने पर अय्यूब
उन्हें बुलाकर शुद्ध किया करता था। वह
बड़े सवेरे उठ कर उनकी संख्या के हिसाब
से होमबलि चढ़ाता था। उसके अन्दर यह
डर था कि शायद मेरे बच्चों ने प्रभु का दिल
दुखाया हो और प्रभु को छोड़ दिया हो।
अय्यूब यह हमेशा किया करता था। 6 एक
दिन प्रभु के बेटे प्रभु के सामने आए। इसी
बीच वहाँ शैतान भी आया। 7 शैतान से प्रभु
ने पूछा, "तुम कहाँ से आए हो?" शैतान
का जवाब था, पृथ्वी पर इधर-उधर चक्कर
लगा कर आया हूँ। 8 प्रभु ने फिर पूछा,"क्या
तुमने मेरे दास अय्यूब पर गौर किया है?"
उसकी तरह कोई ईमानदार और सच्चा और
बुराई से दूर रहने वाला इन्सान और कोई
नहीं है। 9 शैतान बोला,"क्या प्रभु से बिना
किसी लाभ पाए अय्यूब ऐसा है? 10 क्या
आपने उसके घर और जो कुछ उस का है।
उन सभी के चारों और देख-रेख की दीवार
नहीं खड़ी रखी है? आपने तो उसके काम
पर भी अपनी आशीष दी है।" 11 उसकी
शौहरत देश भर में फैल चुकी है। अभी आप
कुछ उस का कुछ नुकसान कीजिए, तब
यही अय्यूब आपकी बुराई करेगा। 12 प्रभु ने
शैतान से कहा, "सुनो, जो कुछ भी उसका
है, वह तुम्हारे सुपुर्द है। बस, उसकी देह
को मत छूना।" तभी शैतान वहाँ से चला
गया। 13 एक दिन अय्यूब के बेटे -बेटियाँ बड़े
भाई के यहाँ दावत उड़ा रहे थे। 14 तभी एक
नौकर दौड़ा-दौड़ा अय्यूब के पास आया और
बोला, "हम खेत जोत रहे थे, 15 हमारे गधे
वही पास में चर रहे थे। तभी शबा के लोग
आकर उन्हें हाँक ले गए। तुम्हारे सेवकों को
उन्होंने मार डाला। मैं ही अकेला बच गया
और तुम्हें यह खबर दे रहा हूँ।" 16 वह अपनी
बात पूरी कर ही चुका था, कि दूसरा भी वहाँ
आ पहुँचा और बोला, "आकाश से आग
नीचे आई, जिस की वजह से भेड़-बकरियाँ
और काम करने वाले जल कर राख हो गए।
मैं अकेला मरने से बच गया और यह संदेश
लेकर आपके पास आया हूँ। 17 वह अभी यह
कह ही रहा था, कि एक और व्यक्ति आकर
कहने लगा,"कसदी लोगों ने आ कर धावा
बोला और ऊँटों पर उन्हें ले गए। उन्होंने
तुम्हारे कार्यकर्ताओं की जान ले ली। मैं ही
बचा था और तुम्हें यह समाचार दे रहा हूँ।
18 उसके यह सब कहने के दौरान ही एक
और आदमी आकर कहने लगा,"तुम्हारे बेटे
-बेटियाँ, बड़े बेटे के घर पर खाना खा रहे थे,
19 कि जंगल की ओर से तेज आँधी आने से
घर बर्बाद हो गया और तुम्हारे बेटे-बेटियाँ मर
गए। मैं तुम्हें यह बताने आया हूँ। 20 यह सब
कुछ सुनने के बाद अय्यूब उठा, अपने कपड़े
फाड़े, सिर मुड़वा कर सिर ज़मीन पर टिका

दिया। फिर उसने कहा, 21 "मैं नंगा माँ के पेट
से आया था और वापस नंगा लौट जाऊँगा।
प्रभु परमेश्वर का धन्यवाद हो। सब कुछ
मुझे उन्हीं से मिला था। अब सब कुछ खत्म
हो गया है।" 22 इतना सब होने के बावजूद
अय्यूब ने परमेश्वर को दोषी न ठहराया।

2 एक और दिन प्रभु परमेश्वर के बेटे
उनके सामने आए। तभी शैतान भी वही
पहुँच गया। 2 प्रभु ने शैतान से सवाल किया,
"तुम कहाँ से आ रहे हो?" शैतान ने उत्तर
दिया, पृथ्वी पर मंडराता रहा हूँ।" 3 प्रभु ने
पूछा, '' क्या तुमने अपनी निगाह मेरे दास
अय्यूब पर डाली है, दुनिया में "उसके समान
सच्चा, सीधा, बुरे कामों से बचने वाला और
मुझे आदर देने वाला और कोई नहीं है?
हालांकि तुमने मुझे बिना किसी कारण के
बर्बाद करने के लिए उकसाया था, फिर भी
वह अपने सच्चे रास्ते से नहीं हटा। 4 शैतान
का उत्तर था, "खाल की जगह खाल, लेकिन
अपनी जान के बदले इन्सान अपना सब
कुछ न्यौछावर कर देता है। 5 इसलिए केवल
अपना हाथ बढ़ाईये और उसकी हड्डियाँ तथा
मांस को छू लीजिये, तब वह आपके विरोध
में बोलेगा।" 6 प्रभु शैतान से बोले,"सुनो, मैं
उसे तुम्हारे हाथ में सौंपता हूँ, बस उसकी
जान पर आँच न आने पाए। 7 शैतान इस
बातचीत के बाद वहाँ से चला गया। उसने
अय्यूब के पैर के तलवे से सिर तक बड़े-बड़े
फ़ोड़ों से तकलीफ़ दी। 8 हाथ में एक ठीकरा
ले कर अय्यूब राख पर बैठ कर खुजलाने
लगा। 9 अय्यूब की पत्नी आई और कहने
लगी, "तुम कब तक ईमानदारी और सच्चाई
का जीवन जिओगे? प्रभु के खिलाफ़ बोलो,
चाहे जिओ या मरो।" 10 वह अपनी पत्नी
से बोला, "एक बेवकूफ़ महिला की तरह
बात मत करो। हम जो प्रभु से सुख लेते
हैं, क्या दुख न लें ?" इन सभी बातों में
अय्यूब ने अपने मुँह से कोई गुनाह नहीं
किया। 11 तेमानी एलोपज़, शूही बिलदद और
नामाती सोपर ने, जो कि अय्यूब के दोस्त
थे, सुना कि अय्यूब के साथ क्या हुआ है।
उस से मिलने और शान्ति देने वे सभी चल
पड़े। 12 अय्यूब की हालत ऐसी थी कि वे दूर
से उसे पहचान तक न सके। उन्होंने अपने
कपड़े फाड़ते हुए धूल अपने ऊपर डाली।
13 सात दिन और सात रात वे उसके साथ
ज़मीन पर बैठे रहे। अय्यूब के भारी दुख का
एहसास करने के कारण उन्होंने अपना मुँह
नहीं खोला।

3 इसके बाद अय्यूब अपने जन्म दिन को
कोसने लगा, 2,3 "वह दिन जल जाए,
जिस में मैं पैदा हुआ और वह रात भी जिस
में किसी ने कहा,बेटा पैदा हुआ है।" 4 वह
दिन अन्धेरा हो जाए प्रभु उस पर ध्यान न दे।
5 अन्धेरे और मौत की छाया उस पर रहे। उस
पर बादल छाए रहें और दिन को अन्धेरा कर
देने वाली चीजें उसे डराएँ। 6 घना अन्धकार
उस रात को पकड़ ले। साल के बीच वह
खुशी न मना सके। उसकी गिनती महीनों में
न की जाए। 7 सुनो, वह रात बांझ बन जाए
उस में गीत गाने की आवाज़ न सुनाई दे।
8 जो लोग किसी दिन को भला-बुरा कहते
हैं और लिब्यातान को छेड़ने में माहिर हैं,
वे उसको भला-बुरा कहें। 9 उसकी शाम के
सितारे रोशनी न दें, वह रोशनी का इन्तज़ार
करे, लेकिन पा न सके। वह सुबह को भी न
देख सके। 10 क्योंकि उसने मेरी माँ की कोख
को बन्द न किया और दुख को मेरी आँखों
से न छिपाया। 11 मैं माँ के पेट ही में क्यों नहीं
मर गया ? पेट से निकलते वक्त मेरी जान

क्यों नहीं निकल गयी। 12 मुझे घुटनों पर क्यों
लिया गया ? मैं छातियों से दूध क्यों पी सका
? 13 यदि ऐसा न होता तो मैं खामोश रहता,
मैं सोता रहता और आराम करता होता। 14 मैं
दुनिया के उन राजाओं और मन्त्रियों के साथ
होता, जिन्हों ने अपने लिए सुनसान जगहें
बनवा लीं, 15 या मैं उन राजकुमारों के साथ
होता जिन के घर चाँदी -सोने से भरे होते हैं।
16 या मैं समय से पहले गिरने वाले गर्भ की
तरह होता, जो रोशनी को कभी नहीं देखता
17 उस हालत में बुरे लोग मुझे कष्ट नहीं देते,
और थके लोग आराम पाते हैं। 18 उस में
गुलाम एक साथ सुख से रहते हैं और मेहनत
कराने वाले की आवाज़ नहीं सुनते 19 उस
में छोटे-बड़े सभी रहते हैं और गुलाम अपने
मालिक से आज़ाद रहता है। 20 दुखियों को
रोशनी और निराश मन वालों को जीवन क्यों
मिलता है ? 21 वे मौत का इन्तज़ार करते
हैं, लेकिन वह आती नहीं। छिपी हुयी दौलत
की तरह वे उसको ढूँढते हैं 22 वे लोग कब्र में
पहुँचकर खुश होते हैं। 23 रोशनी उस इन्सान
को मिलती है, जिस का रास्ता छिपा हुआ है,
जिसे चारों ओर प्रभु ने घेर रखा है। 24 खाना,
खाने के बजाए मैं गहरी सांसे लेता हूँ, मेरा
रोना धारा की तरह है। 25 जिस बात से मैं
डरता हूँ, वही मुझ पर आ जाती है। 26 मुझे
चैन और सुकून नहीं मिल रहा है, लेकिन
बहुत दुखी हूँ।

4 तब तेमानी एलिपज़ बोला, 2 "यदि कोई
कुछ कहे, तो क्या तुम बुरा मानोगे?
3 तुमने बहुतों को सिखाया है और कमज़ोर
लोगों को ताकत दी है। 4 अपनी सलाह
मशविरा से तुमने उदास लोगों की हिम्मत
बढ़ायी है, लड़खड़ा जाने वालों को तुमने
सम्भाल लिया। 5 अब तो तुम्हारे ऊपर
मुसीबतों का पहाड़ टूट पड़ा है और तुम
मायूस हो रहे हो। उसके छू लेते ही तुम घबरा
गए हो। 6 क्या प्रभु का डर ही तुम्हारा आसरा
नहीं है ? तुम्हारा अच्छा चरित्र क्या तुम्हारी
उम्मीद नहीं है? 7 क्या तुम जानते हो कि
निर्दोष इन्सान पर बर्बादी कभी नहीं आई, या
कहीं सज्जन लोग काट भी डाले गए? 8 जहाँ
तक मेरा अनुभव हे, जो लोग गुनाह जोतते हैं,
दुख की फ़सल काटते हैं 9 वे लोग प्रभु की
सांस से बर्बाद होते हैं और उनके गुस्से के
झोंके से भस्म हो जाते हैं। 10 शेर का गरजना
और जवान शेर का गुर्राना बन्द हो जाता है।
और जवान शेरों के दाँत तोड़े जाते हैं 11 बूढ़ा
शेर शिकार न कर सकने पर मर जाता है,
और सिंहनी के बच्चे भटक जाते हैं। 12 एक
बात मेरे पास खामोशी से पहुँची है 13 रात
के सपनों की चिन्ताओं के बीच जब इन्सान
गहरी नींद में होता है, 14 मैं ऐसा कांपने लगा
मानो मेरी हड्डियाँ तक हिल गई थीं। 15 मेरे
सामने से एक आत्मा गुज़री और मेरी देह
के रोएं खड़े हो गए। 16 वह खामोश थी और
रूक गयी। उसके आकार को मैं पहचान न
सका। लेकिन मेरी आँखों के सामने एक रूप
था। पहले सन्नाटा था, थोड़ी देर में एक शब्द
सुनाई दिया। 17 क्या नाशमान इन्सान प्रभु से
ज़्यादा इन्साफ़ करने वाला हो सकता है?
क्या इन्सान अपने बनाने वाले से अधिक
पवित्र हो सकता है? 18 देखो, वह अपने
सेवकों पर भरोसा नहीं रखता, और अपने
स्वर्गदूतों को बेवकूफ़ ठहराता है। 19 जो
मिट्टी के घरों में रहते हैं और जिन का आधार
ही मिट्टी है और जो पतिंगे की तरह कुचल
जाते हैं, उनकी क्या गिनती ? 20 वे सुबह से
शाम तक बर्बाद किए जाते हैं। हमेशा हमेशा
के लिए वे मिट जाते हैं, उनके बारे में कोई
सोचता तक नहीं है। 21 क्या उनके डेरे की

डोरी उनके भीतर ही भीतर कट नहीं जाती ?
वे बुद्धिहीन ही चल बसते हैं।

5 आवाज़ देकर देखो, क्या तुम्हें कोई
जवाब देगा? क्या तुम स्वर्गदूत से कुछ
मदद की आशा करोगे ? 2 क्योंकि बलवई[a]
तो दुख मनाते मनाते बर्बाद हो जाएगा, और
भोला जलते-जलते मर मिटेगा। 3 मैंने मूढ़[b]
को जड़ पकड़ते देखा है, लेकिन मैंने फिर
उसकी रहने की जगह को कोसा 4 उसके
बाल बच्चों को मुक्ति का अनुभव नहीं है - वे
फ़ाटक पर पीसे जाते हैं। उन्हें छुड़ाने वाला
भी कोई नहीं है। 5 भूखे लोग उसके खेत
की पैदावार को खा लेते हैं, यहाँ तक कि
कटीली बाड़ में से भी निकाल लेते हैं। प्यासा
व्यक्ति उनकी दौलत के लिए जाल बिछाता
है। 6 उसकी मुसीबत मिट्टी से नहीं पैदा होती
है और न ही क्लेश ज़मीन से उत्पन्न होता
है। 7 जिस तरह चिंगारियाँ ऊपर उड़ जाती
हैं, वैसे ही इन्सान समस्याओं से बच नहीं
सकता है, 8 लेकिन मैं तो प्रभु ही को चाहूँगा
मैं अपनी समस्या प्रभु पर ही छोड़ दूँगा। 9 वह
बड़े-बड़े काम करते हैं, जिस का वर्णन करना
मुश्किल है, वह इतने अजीब काम करते हैं,
कि उनकी गिनती नहीं हो सकती। 10 वह
बरसात भेजते हैं और खेतों को पानी मिलता
है। 11 इसी तरह वह दीन लोगों को ऊँचे पद
पर बैठाते हैं, जो लोग गम में ज़िन्दगी बिताते
हैं, वे ऊँचाई पर पहुँचकर बच जाते हैं।
12 धूर्त लोगों की योजनाओं को वह बेकार
ठहराते हैं। वे लोग कुछ कर भी नहीं पाते
है। 13 चालाक लोगों को वह उनकी धूर्तता में
फँसाते हैं और कुटिल लोगों की योजनाएँ पूरी
नहीं होने देते। 14 उन लोगों के ऊपर अन्धेरा
छा जाता है, दिन दुपहरी में वे रात की तरह
टटोलते फिरते हैं। 15 वह गरीबों को उनके
वचन रूपी तलवार से और ताकतवर लोगों
के हाथ से बचाते हैं। 16 इसलिए गरीबों को
उम्मीद होती है और कुटिल इन्सानों का मुँह
बन्द हो जाता है। 17 देखो, क्या ही आशीषित
आदमी वह है, जिस को प्रभु डाँटते-डपटते
हैं। इसलिए तुम उनकी डाँट-डपट से नफ़रत
मत करना। 18 वह ज़ख्मी करते हैं और फिर
पट्टी भी बाँधते हैं। वही मारते और वही
स्वस्थ करते हैं। 19 वह तुम्हें छैः मुसीबतों
से छुड़ाएँगे। सात मुसीबतों से भी तुम्हारा
नुक्सान नहीं होगा। 20 तुम को वह आकाल
में भुखमरी और युद्ध में मरने से बचा लेंगे।
21 तुम वचन रूपी कोड़े से बचे रहोगे और
जब मुसीबत आए तब भी तुम्हें डर न लगेगा।
22 उजाड़ और आकाल के वक्त में भी तुम
खुशाल रहोगे, जंगली जानवरों से तुम्हें डर
नहीं लगेगा। 23 मैदान के पत्थर भी तुम से
वाचा बान्धेंगे, जंगली जानवर तुम्हारे साथ
शान्ति से रहेंगे। 24 तुम इस बात से निश्चिन्त
रहोगे कि तुम्हारा घर -दार ठीक-ठाक है।
25 तुम्हें अपने नाती-पोतों-परपोतों के होने का
भी भरोसा होगा। यह भी कि सन्तान पृथ्वी
की घास की तरह होगी। 26 जिस तरह से
फूलों का गट्ठा खलिहान में रखा जाता है, वैसे
ही तुम पूरी उम्र के होकर ही मरोगे। 27 हमारी
खोजबीन के बाद हम इसी नतीजे पर पहुँचे
हैं, अपने फ़ायदे के लिए तुम याद रखो।

6 फिर अय्यूब बोला, 2 अच्छा होता यदि
कोई मेरे दुःख को तौल सकता और मेरी
सारी मुसीबत तराजू में रखी जाती। 3 क्योंकि
उस का वज़न बालू के वज़न से भी अधिक
होता । इसीलिए मैं बिना सोचे-समझे बोल
उठा। 4 इसलिए कि प्रभु के तीर मेरे भीतर

[a] 5.2 मूर्ख [b] 5.3 बलवई या ज़िद्दी

चुभ चुके हैं, उनकी तस्वीर मेरी आत्मा में
समा गई है, प्रभु की भयंकर बातें मेरे खिलाफ़
खड़ी हुयी हैं। 5 जब बनैले गधे को गास
मिलती तो क्या वह रेंकता है? और बैल क्या
चारा मिलने बाद डकारता है? 6 फीकी चीज़
को क्या बिना नमक के खा सकते हैं? क्या
अण्डे की सफ़ेदी में कुछ स्वाद होता है ?
7 जिन वस्तुओं को मैं छूना तक नहीं चाहता
हूँ, वही मेरे लिए घिनौनी बन गई हैं। 8 अच्छा
होता कि मैं जो मांगता, मुझे मिल जाता और
जिस बात की मुझे उम्मीद है, वह प्रभु मुझे
दे देते, 9 कि खुशी से प्रभु मुझे कुचल डालते
और अपना हाथ बढ़ाकर मुझे काट डालते।
10 यही मेरी शान्ति का कारण है। भारी दर्द
में भी मैं उछल पड़ता, क्योंकि मैंने प्रभु की
बातों का इन्कार नहीं किया 11 मेरे में ताकत
ही नहीं है कि मैं आशा रखूँ। मेरी ज़िन्दगी
का अन्त क्या है कि मैं धीरज रखूँ। 12 क्या
मैं पत्थरों की तरह मज़बूत हूँ? क्या मैं पीतल
का बना हूँ? 13 क्या मैं बे-सहारा नहीं हूँ?
क्या मैं इतना कमज़ोर नहीं हो गया हूँ, कि मैं
कुछ काम ही नहीं कर सकता। 14 जो दूसरे
पर दया नहीं करता, वह सृष्टिकर्ता के डर में
जीवन नहीं बिताता है। 15 मेरे भाई नाले की
तरह धोखेबाज़ हो चुके हैं, ऐसे नाले जो सूख
जाते हैं। 16 और वे बर्फ़ के कारण काले पड़
जाते हैं। उन में बर्फ़ छिपी रहती है। 17 गर्मी
पड़ने पर उनका प्रवाह दिखता ही नहीं। जब
तेज धूप पड़ती है, वे अपनी जगह से गायब
हो जाते हैं। 18 घूमते -घूमते वे सूख जाते और
सुनसान जगह में बह कर नाश होते हैं। 19 तेमा
के बनजारे देखते रहे और शबा के काफ़िले
वाले उनकी जगह देखते रहे। 20 वे शर्मिन्दा
हुए क्योंकि उन्होंने भरोसा रखा था और वहाँ
पहुँचकर उनके मुँह सूख गए। 21 इसी तरह
अब तुम भी कुछ न रहे, मेरी मुसीबत देख
कर तुम डर गए हो। 22 क्या मैंने तुम से कुछ
मांगा था ? या यह कि अपनी दौलत में से
घूस दो, 23 या मुझे सताने वालों के हाथ से
मुझे बचाओ ? या बलवा करने वालों के
वंश से छुड़ा लो ? 24 मुझे सिखाओ और मैं
खामोश रहूँगा। मुझे बताओ कि मुझ से क्या
गलती हुई है। 25 सच्चाई के शब्दों का बड़ा
असर होता है, लेकिन तुम्हारी बहस से क्या
फ़ायदा? 26 बातें पकड़ने की तुम क्या सोच
भी सकते हो ? निराश व्यक्ति की बातें हवा
की तरह हैं। 27 तुम लोग अनाथों पर चिट्ठी
डालते और अपने दोस्त को बेच कर फ़ायदा
उठाने वाले हो। 28 इसलिए कृपा करके मेरी
तरफ़ नज़र डालो। मैं तुम से कभी भी झूठ
न बोलूँगा। 29 बेइन्साफ़ी न होने पाए। इस
मुकदमें में मेरी ईमानदारी वैसी ही बनी हुयी
है। 30 क्या मेरी कही बातों में झूठ और फ़रेब
है ?

7 क्या इन्सान को इस दुनिया में कड़ी
मेहनत नहीं करनी पड़ती है ? क्या
उसके दिन एक मजदूर के से नहीं होते हैं?
2 जिस तरह कोई गुलाम छाया की आशा
करे, या मजदूर अपनी मज़दूरी की राह देखे
3 वैसे ही मैं बेकार के महीनों का मालिक
बनाया गया हूँ। मेरे लिए पीड़ा भरी रातें
ठहराई गयी हैं। 4 लेटते समय मैं कहता हूँ,
“मैं उठूँगा कब? रात कैसे कटेगी? भोर होने
तक मैं छटपटाता रहता हूँ। 5 मेरी देह कीड़ों
और मिट्टी से ढकी हुई हैं। मेरी खाल चिपक
गयी है और गलती जा रही है। 6 मेरे दिन
जुलाहे की धौकनी से तेज तेज बीतते जा रहे
हैं और ये दिन निराशा के हैं। 7 याद करो,
मेरा जीवन हवा ही है और अपनी आँखों से
मैं अपनी भलाई कभी न देख पाऊँगा। 8 मुझे
जो लोग अभी देख रहे हैं, फिर न देखेंगे।

तुम्हारी आँखें मेरी ओर होंगी, लेकिन मैं न
मिल पाऊँगा। 9 जिस तरह बादल छटने के
बाद गायब हो जाते हैं, वैसे ही अधोलोक में
उतरने वाला, फिर वापस नहीं आता। 10 वह
अपने घर नहीं लौटेगा, न ही अपनी जगह
पर मिलेगा। 11 इसलिए मैं चुप न रहूँगा। मैं
अपना मुँह खोलकर मन का भेद बताऊँगा।
अपने भीतर की कड़वाहट की वजह से
कुड़कुड़ाता रहूँगा। 12 क्या मैं समुद्र हूँ या
मगरमच्छ, कि तुम मुझ पर पहरा बैठाते हो
? 13 जब-जब मैं सोचता हूँ कि चारपाई पर
मुझे सुकुन मिलेगा, और बिस्तर पर मेरा दुख
कम हो जाएगा, 14 तब तक आप मुझे सपनों
से घबरा देते और दर्शनों से डरा देते हैं।
15 यहाँ तक कि मेरा मन फाँसी और मौत को
अधिक चाहता है बजाए जीवित रहने के।
16 अपने जीवन से मुझे नफ़रत हो गयी है।
मैं लम्बे समय तक ज़िन्दा नहीं रहना चाहता
हूँ। सांस की तरह मेरा जीवन हो गया है।
17 इन्सान है ही क्या कि आप उसे महत्व दें
और अपना मन उस पर लगाएँ। 18 और हर
सुबह उसकी ओर ध्यान दें तथा हर पल उसे
परखते रहें। 19 आप कब तक मेरी ओर दृष्टि
लगाए रहेंगे। क्या इतनी देर के लिए भी न
छोड़ेंगे कि मैं अपना थूक निगल सकूँ। 20 हे
मनुष्य को ताकने वाले, मैंने बलवा तो किया
होगा, तो उस से मैंने आप का क्या बिगाड़ा
? आपने मुझे अपना निशाना क्यों बना लिया
है ? अब तो मैं खुद अपने ऊपर बोझ बन
गया हूँ। 21 आप मेरे गुनाह को माफ़ क्यों नहीं
करते ताकि मैं शुद्ध हो जाता। अब मैं मिट्टी
में मिल जाऊँगा। आप मुझे ढूँढेंगे, लेकिन पा
नहीं सकेंगे।

8 तब शूही बिलदद ने कहा,“तुम ऐसी
बातें कब तक करते रहोगे ? तुम्हारी
बातें तेज हवा की तरह कब तक रहेंगी।
3 क्या प्रभु बेइन्साफ़ी करते हैं? क्या वह सच
को झूठ में बदलते हैं? 4 यदि तुम्हारे बाल
बच्चों ने प्रभु के खिलाफ़ बलवा किया है, तो
उसने उन्हें उसकी सज़ा दी है। 5 फिर भी यदि
तुम मन से प्रभु को चाहते, और गिड़गिड़ाकर
उन से प्रार्थना करते, 6 यदि तुम निर्दोष और
सच्चे होते तो प्रभु तुम्हारे लिए ज़रूर जागते,
और तुम्हारा हाल पहले की तरह हो जाता।
7 यदि तुम पहले ज़्यादा समृद्ध न भी होते,
तौभी अन्त में काफ़ी बढ़त हो जाती। 8 आने
वाली पीढ़ी से पूछो और जो कुछ उनके
पूर्वजों ने जाँच पड़ताल की, उस पर नज़र
डालो। 9 हम कल के ही हैं और सब कुछ
मालूम नहीं है। इस दुनिया में हमारे दिन छाया
की तरह बीतते जाते हैं। 10 क्या वे तुम से
सीख की बातें नहीं कहेंगे? 11 बिना पानी के
क्या कछार की घास उगती है? बिना कीचड़
क्या सरकण्डा बढ़ता है ? 12 चाहे वह हरी हो
और काटी भी नहीं गई हो, तौभी दूसरी घास
की तुलना में जल्दी सूख जाती है। 13 सभी
प्रभु के भूल जाने वालों का यही हाल होता हैं
और जो खरा जीवन नहीं जीते है उनका यही
हाल होता है। 14 उसकी आशा की जड़ कट
जाती है, और वह जिस का भरोसा करता
है, वह मकड़ी का जाला ठहराता है। 15 चाहे
वह अपने घर पर टेक लगा दे फिर भी वह
ठहरने का नहीं। वह उसे मज़बूती से थामेंगा
लेकिन वह ठहरा नहीं रहेगा। 16 धूप से वह
हरा-भरा हो जाता है उसकी डालियाँ बगीचे में
इधर उधर फैलती हैं। 17 उसकी जड़ कंकड़ों
के ढेर में लिपटी रहती है और वह पत्थर की
जगह को देख लेता है। 18 लेकिन जब वह
अपनी जगह पर से नाश किया जाए, तब वह
जगह उस से यह कह कर मुँह मोड़ लेगी,
कि उसने उसे कभी देखा ही नहीं। 19 देख

उसकी आनन्द भरी चाल यही है फिर उसी
मिट्टी में से दूसरे उगेंगे। 20 देखो, प्रभु न तो
खरे इन्सान को बेकार जान कर छोड़ देते
हैं और न ही बुराई करने वालों को संभालते
हैं। 21 तुम्हारे मुँह पर वह मुस्कुराहट देंगे और
तुम से जयजयकार कराएँगे। 22 तुम्हारे दुश्मन
शर्मिन्दा होवेंगे और दुष्टों का घर कहीं न रहने
पाएगा।

9 तब अय्यूब ने जवाब दिया, 2 "मुझे
मालूम है कि यही सच है लेकिन मनुष्य
प्रभु की निगाह में बेदाग और खरा कैसे
बन सकता है? 3 चाहे वह उन से मुकदमा
लड़ना भी चाहे, तौभी हज़ार बातों में से
एक का उत्तर भी इन्सान न दे सकेगा।
4 वह समझदार और शक्तिशाली हैं, उनके
खिलाफ़ में ज़िद्द करके कौन जीत पाया है?
5 पहाड़ों को वह अचानक ही हटा देते हैं और
उनका अता-पता ही नहीं चलता। गुस्से में
वह उन्हें उलट-पुलट देते हैं। 6 वह पृथ्वी को
हिला-हिला कर उसकी जगह से अलग करते
हैं और उनके खम्भे काँपने लगते हैं। 7 उनके
बिना आदेश दिये सूरज नहीं निकलता है,
वह तारों पर अपनी मुहर लगाते हैं। 8 वह
अकेले ही आकाशमण्डल को फ़ैलाते हैं,
और समुन्दर की ऊँची-ऊँची लहरों पर चलते
हैं। 9 वह सप्तर्षि, मृगशिरा और कचपचिया
और दक्षिण के नक्षत्रों को बनाने वाले हैं।
10 वह ऐसे बड़े काम करते हैं, जिन्हें समझा
तक नहीं जा सकता। ये काम इतने होते हैं
कि उनकी गिनती तक नहीं की जा सकती
है। 11 देखो, वह मेरे सामने से निकलते हैं,
लेकिन मुझे दिखते नहीं। वह आगे बढ़ जाते
हैं और मैं कुछ समझ नहीं पाता हूँ। 12 देखो,
जब वह छीनने लगे, तब कौन उन्हें रोक
सकता है? 13 प्रभु अपना गुस्सा ठण्डा नहीं
करते । घमण्डी के मददगारों को उनके पाँव
के नीचे झुकना पड़ता है। 14 फिर मैं कौन
हूँ कि उनको जवाब दूँ और उन से जुबान
लड़ाऊँ। 15 चाहे मेरे में कोई खोट न होता,
लेकिन उनको जवाब नहीं दे सकता। मैं
अपने मुद्दई से गिड़गिड़ा कर बिनती करता
16 वह मेरे पुकारने पर चाहे मुझे उत्तर देते,
तौभी मुझे इस बात पर विश्वास न होता कि
वह मेरी बात सुनते हैं। 17 आँधी चला कर
वह मुझे तोड़ देते हैं, बिना किसी वजह
वह मेरी चोट पर चोट लगा रहे हैं। 18 वह
मुझे सांस भी नहीं लेने देते हैं और मुझे
कड़वाहट से भर देते हैं। 19 यदि शक्ति की
बात की जाए तो वह शक्तिशाली हैं। यदि
इन्साफ़ की बात करें तो वह कहेंगे कि मुझ
से कौन मुकदमा लड़ेगा? 20 चाहे मेरे ऊपर
कोई आरोप साबित न भी हो, मैं अपने मुँह
से ही दोषी ठहराया जाऊँगा। 21 मैं ईमानदार
और सच्चा हूँ लेकिन अपने बारे में सब कुछ
अच्छी तरह नहीं जानता हूँ, अपने जीवन से
मुझे नफ़रत हो गयी है। 22 यह सच है कि
प्रभु खरे और दुष्ट दोनों को मरने देते हैं।
23 जब लोग मुसीबत से अचानक मरने लगते
हैं, तब वह निर्दोष लोगों के परखे जाने पर
हँसते हैं। 24 यदि देश दुष्टों के सुपुर्द किया
जाता है, तो वह उसके जजों की आँखें बन्द
कर देते हैं, इस को करने वाला वही नहीं,
तो और कौन है ? 25 मेरे दिन हरकारे से भी
ज़्यादा तेजी से चले जाते हैं। वे भाग जाते हैं
और उन्हें कुछ भी अच्छा होते नहीं दिखता।
26 वे तेजी से चलने वाली नाव की तरह हैं
या शिकार पर झपट्टा मारते हुए उकाब की
तरह। 27 यदि मैं कहूँ कि मैं रोना-धोना बन्द
कर दूँगा या उदास न रह कर खुश होऊँगा।
28 तब मैं अपने सभी दुखों से डरता हूँ, मुझे
मालूम है कि आप मुझे दोष मुक्त नहीं कहेंगे।

29 मेरे ऊपर तो इल्ज़ाम होगा, फिर मैं बेकार
मेहनत क्यों करूँ। 30 चाहे मैं बर्फ़ के पानी
से नहाऊँ और अपने हाथों को साबुन से शुद्ध
करूँ। 31 फिर भी आप मुझे गड्ढे में डाल
ही देंगे। मेरे कपड़े भी मुझ से घिन खाएँगे।
32 क्योंकि वह मेरी तरह इन्सान नहीं हैं कि
मैं उन से जुबान लड़ाऊँ और हम दोनों एक
दूसरे से मुकदमा लड़ सकें। 33 हम दोनों के
बीच कोई मध्यस्थ नहीं है, जो हम दोनों पर
अपना हाथ रखे। 34 वह अपनी छड़ी मुझ पर
से दूर करें और उनकी डरा देने वाली बात
मुझ में घबराहट न पैदा करे, 35 तब मैं उन से
बिना डरे कुछ कह पाऊँगा, क्योंकि मैं अपनी
निगाह में ऐसा नहीं हूँ।

10 मैं ज़िन्दगी से ऊब चुका हूँ, अब मैं
दिल खोल कर कुड़कुड़ाऊँगा। 2 मैं
प्रभु से कहूँगा, मुझे गुनाहगार मत ठहराईए।
मुझे बताएँ कि मुझ से मुकदमा क्यों लड़ रहे
हैं ? 3 क्या आप को अन्धेर करना ओर दुष्टों
की योजना को सफ़ल करके अपने हाथों के
बनाए हुए को बेकार जानना अच्छा लगता
है? 4 क्या आपकी आँखें देह धारण करने
वालों की सी हैं ? और क्या आपके देखने का
नज़रिया मनुष्य की तरह है? 5 क्या आपके
दिन मनुष्य के दिनों की तरह हैं? 6 कि आप
मुझ में खोट ढूँढते रहते हैं? और मेरे गुनाह
के बारे में पूछते हैं? 7 आप को तो मालूम है
कि मैं बुरा नहीं हूँ और आपके हाथ से कोई
छुड़ा भी नहीं सकता है। 8 आपने मुझे बनाया
है, फिर मुझे नाश कर रहे हैं। 9 याद करें, कि
आपने मुझे मिट्टी से बनाया है, क्या आप फिर
से मुझे मिट्टी में मिला देंगे? 10 क्या आपने मुझे
दूध की तरह जमा कर नहीं बनाया? 11 इसके
बाद आपने मांस और खाल चढ़ाई। उसके
बाद और हड्डियाँ और नसें चढ़ायी। 12 आपने
मुझे ज़िन्दगी दी और मुझ पर अपनी करुणा
की। आपकी देख-रेख की वजह से मेरी जान
की रक्षा हुई। 13 फिर आपने ऐसी बातों को
अपने मन में छुपा कर रखा था। मुझे मालूम
हो गया है कि आपने ऐसा इरादा कर ही लिया
था 14 मैं जो अपराध करूँ उस का हिसाब
आप रखते हैं। 15 यदि मैं बुरा करूँ तो मुझे
सख्त सज़ा मिले। यदि मैं बुरा न भी करूँ तो
भी घमण्ड नहीं करूँगा। क्योंकि मेरा अनादर
हो रहा है। मेरी नज़र मेरे दुख पर लगी हुई
है। 16 चाहे मैं अपना सिर उठाऊँ, आप शेर
की तरह मेरा शिकार करते हैं। और फिर मेरे
खिलाफ़ आश्चर्य के काम करते हैं। 17 आप
मेरे सामने नए-नए गवाह ले आते हैं और मुझ
पर अपना गुस्सा बढ़ाते हैं। मुझ पर फ़ौज
पर फ़ौज हमला कर रही है। 18 माँ के गर्भ से
आपने मुझे क्यों निकाला? मैं वहीं मर जाता
और मुझे कोई देख नहीं पाता। 19 मेरा होना
न होना तब एक ही बात होती और माँ के पेट
से सीधा कब्र पहुँचाया जाता। 20 मेरा जीवन
क्या छोटा सा नहीं? मुझे छोड़ दीजिए। मेरी
तरफ़ से अपना मुँह मोड़ लीजिए, ताकि मुझे
सुकून मिल जाए। 21 इस से पहले कि मैं
वहाँ जाऊँ जहाँ से कभी लौटूँगा नहीं, अर्थात
अन्धेरे और घोर अन्धेरे के देश में से। 22 और
मौत के अन्धेरे का देश, जिस में कुछ भी
अच्छा नहीं है। वहाँ की रोशनी भी अन्धेरे
की तरह है।

11 नामाती सोपर बोलने लगा; 2 जो
बातें कही जा चुकी है, क्या उनका
जवाब नहीं देना चाहिए? क्या बक-बक
करने वाला निर्दोष ठहराया जा सकता है?
3 क्या तुम्हारी इस बक-बक के सामने लोग
खामोश बैठे रहें? और जब तुम हँसी उड़ाते
हो, तो क्या तुम्हें कोई शर्मिन्दा न करे? 4 तुम

तो कहते हो कि मेरे सिद्धान्त सही हैं और मैं
प्रभु की निगाह में बेदाग हूँ। 5 अच्छा होता
यदि प्रभु खुद बातचीत करते और तुम्हारे
खिलाफ़ कुछ बोलते 6 और तुम पर ज्ञान की
छिपी बातों को ज़ाहिर करते, कि उनका
मतलब तुम्हारी समझ से बढ़ कर है, इसलिए
यह जान लो कि तुम्हारी बुराईयों में से बहुत
कुछ प्रभु भूल जाते हैं। 7 क्या तुम प्रभु की
छिपी शान की बातों की थाह पा सकते हो?
क्या तुम सर्वशक्तिमान का रहस्य पूरी तरह से
परख सकते हो? 8 वह आकाश से ऊँची हैं,
तुम कर ही क्या सकते हो? वह अधोलोक से
गहरी हैं, तुम्हारी क्षमता ही नहीं है कि समझ
सको। 9 उसकी नाप पृथ्वी से भी अधिक है
और समुन्दर से चौड़ी है। 10 जब प्रभु बीच से
गुज़र कर बन्द कर दें और अदालत में बुलाएँ,
तो कौन उनको रोक सकता है? 11 क्योंकि
वह पाखण्डी लोगों के बारे में जानते हैं।
बेकार के कामों को आसानी से जान लेते हैं।
12 लेकिन इन्सान कंगाल और बेअक्ल होता
है, इन्सान जन्म ही से जंगली गधे के बच्चे की
तरह होता है। 13 यदि तुम अपने मन को साफ़
करो और प्रभु की ओर अपने हाथ फैलाओ।
14 और तुम से जो भी गलत काम हुआ हो,
उस से हट जाओ और अपने घर में कुछ
बुराई न रहने दो। 15 तब तुम अपने मुँह को
बिना किसी आरोप के दिखा पाओगे, और
तुम्हें डरना नहीं पड़ेगा। 16 तब तुम अपना
गम भूल जाओगे, जो बह गया, उसे तुम पानी
की तरह याद करोगे। 17 तब तुम्हारा जीवन
दोपहर की रोशनी से अधिक रिशातैम होगा।
फिर चाहे अन्धेरा भी हो, तौभी वह सवेरे
की तरह हो जाएगा। 18 आशा की वजह से
तुम्हारा डर निकल जाएगा और अपने चारों
ओर देख कर, तुम बिना किसी डर सुकून
से रह सकोगे। 19 तुम्हारे लेटने पर कोई तुम्हें
डरा न सकेगा, और बहुत से लोग तुम्हें खुश
करने की कोशिश करेंगे। 20 बुरे लोगों की
आँखें रह जाएँगी, उन्हें कोई ठिकाना न मिल
सकेगा। वे चाहेंगे कि मर जाएँ।

12 तब अय्यूब बोला, 2 इसमें कोई दो
राय नहीं कि मनुष्य के मरने पर
उसकी बुद्धि भी खत्म हो जाती है। 3 तुम्हारी
तरह मेरे पास भी समझ है, मैं तुम लोगों
से कुछ कम नहीं हूँ। ऐसा कौन है जो यह
न जानता हो? 4 मैं प्रभु से प्रार्थना किया
करता था, वह मेरी सुनते थे। लेकिन अब
मेरे पड़ोसी मेरा मज़ाक करते हैं। 5 सुखी
लोग दुखी लोगों को तुच्छ समझते हैं। जिन
के पाँव फ़िसलना चाहते हैं उनकी बदनामी
ज़रूर होती है। 6 डाकुओं के घर सुरक्षित
रहते हैं। जो प्रभु को गुस्सा दिलाते हैं,
उन्हें डर नहीं लगता। उनके हाथ में प्रभु
बहुत देते हैं। 7 जानवरों से पूछो, वे तुम्हें
दिखाएँगे, आकाश की चिड़ियों से भी, वे
तुम्हें बताएँगी। 8 पृथ्वी पर नज़र उठा कर
देखो तुम कुछ सीख सकोगे। समुन्दर की
मछलियाँ भी तुम्हें बताएँगी। 9 कौन है जो
इन सब बातों को नहीं जानता है, कि प्रभु
ही ने इन सब को बनाया है। 10 उनके वश
में एक एक प्राणी की जान और हर इन्सान
की आत्मा रहती है 11 जिस तरह से जीभ
से खाना चखते हैं, क्या उसी तरह कान से
कही बात को परखा नहीं जाता है? 12 बुज़ुर्ग
लोगों में बुद्धि होती है और दीन लोगों के पास
समझ। 13 प्रभु में पूरी बुद्धि और पराक्रम है।
युक्ति और समझ भी उन्हीं में है। 14 देखो,
जिस को वह उखाड़ फेंकें उसे बनाया नहीं जा
सकता। जिस मनुष्य को वह बन्द करें, वह
फिर खोला नहीं जा सकता। 15 देखो, जब
वह बरसात को रोक देते हैं, तो सूखा पड़

जाता है। जब वह पानी छोड़ते हैं, तो बाढ़ आ
जाती है, 16 उन में शक्ति और खरी बुद्धि है,
धोखा देने वाले और खाने वाले सभी उन्हीं
के हैं। 17 वह मन्त्रियों को लूटकर गुलामी में
ले जाते और जज लोगों को मूर्ख बना देते हैं।
18 वह राजाओं के अधिकार का तोड़ डालते
हैं और उनकी कमर पर बन्धन बन्धवाते हैं
19 वह याजकों को लूट कर बन्धुआई में ले
जाते और बलवानों को उलट देते हैं। 20 वह
विश्वासयोग्य आदमियों से बोलने की ताकत
और पुरनियों से विवेक की ताकत ले लेते हैं
21 वह गवर्नरों को अपनी बेइज्ज़ती से लादते,
और ताकतवरों के हाथ ढीले कर देते हैं।
22 वह अन्धेरे की छिपी बातें ज़ाहिर करते
और मौत की छाया को भी रोशनी में ले आते
हैं 23 वह देशों को बढ़ाते और उन्हें नाश भी
कर डालते हैं, वह उन्हें फैलाते और गुलामी
में ले जाते हैं। 24 वह इस दुनिया के खास
लोगों की बुद्धि को उड़ा देते हैं, बिना रास्ते
वाली जगहों में वह उन्हें भटका भी देते हैं।
25 वे लोग रोशनी न होने के कारण टटोलते
फिरते हैं। वह उन्हें मतवाले आदमी की तरह
बना देते हैं, जो इधर उधर डोलता है।

13 सुनो मैंने अपनी आँखों से यह सब
देखा है, मैंने कानों से सुना है और
समझ गया हूँ। 2 जो तुम्हें मालूम है, उस का
ज्ञान मुझे भी है, तुम लोगों से मैं कुछ कम नहीं
हूँ। 3 मैं प्रभु से बातचीत करूँगा। मेरी इच्छा
यही है कि मैं उन से बातें करूँ। 4 लेकिन तुम
लोग झूठी बातें बनाते हो, तुम लोग बेकार
के डॉक्टर रहे हो। 5 अच्छा यही था कि तुम
खामोश रहते, इस से तुम्हें बुद्धिमान समझा
जाता। 6 मेरा तर्क सुनो और मेरी बहस पर
ध्यान दो 7 क्या तुम प्रभु के लिए उल्टी-सीधी
बातें कहोगे और उनकी तरफ़ से कपट की
बात कहोगे ? 8 क्या तुम उनकी[a] तरफ़दारी
करोगे? क्या प्रभु के लिए मुकदमा चलाओगे
? 9 क्या यह अच्छा होगा, कि वह तुम्हें
परखें? क्या जिस तरह से लोगों को धोखा
दिया जाता है, तुम भी उन्हें ऐसा धोखा
दोगे। 10 यदि तुम छिप कर तरफ़दारी करो,
वह तुम्हें ज़रूर डाँटेंगे। 11 क्या तुम उनकी
महानता से डरोगे नहीं? क्या तुम उन से
डरोगे नहीं ? 12 तुम्हारे याद रखने लायक
नीतिवचन राख की तरह है। तुम्हारे कोट
मिट्टी के से हैं। 13 मुझ से बात करना रोको,
ताकि मैं भी कुछ कहूँ, फिर चाहे मुझे कुछ
भी क्यों न सहना पड़े। 14 अपने दाँतों से मैं
अपना मांस क्यों चबाऊँ? और अपनी जान
हथेली पर रखूँ। 15 वह मुझे मार डालेंगे, मुझे
कोई उम्मीद नहीं ? 16 इस से मेरा ही बचाव
होगा, प्रभु रहित इन्सान उनके सामने जा
नहीं सकता। 17 मन लगा कर मेरी सुनो, मेरी
प्रार्थना तुम्हारे कानों में पहुँचे। 18 देखो, बहस
की पूरी तैयारी मैं कर चुका हूँ। मुझे विश्वास
है कि मेरी जीत होगी। 19 मुझ से मुकदमा
कौन लड़ पाएगा, यदि ऐसा कोई है तो मैं
खामोश होकर अपनी जान बचा लूँगा। 20 मेरे
साथ दो काम न करें, तब मैं आप से छिपूँगा
नहीं। 21 मुझे डाँटना-डपटना छोड़ दें, और
मुझे न डराएँ। 22 तब आपके बुलाने पर मैं
बोलूँगा, नहीं तो मैं सवाल करूँगा और आप
मुझे उत्तर देना। 23 मुझ से कितनी बुराई हो
चुकी है, मेरे गुनाहों को मुझे बता दीजिए।
24 आप अपना मुँह क्यों मोड़ लेते हैं और मुझे
अपना दुश्मन समझते हैं? 25 क्या आप उड़ते
हुए पत्ते को भी कंपाएँगे और सूखे डंठल के
पीछे पड़े रहेंगे? 26 आपने मेरे लिए कठिन
दुखों के लिए आदेश दिया है। मेरे जवानी

[a] **13.8** उनकी

में किए गए बुरे कामों का फल मुझे भुगतने
दे रहे हैं। 27 मेरे पांवों को लकड़ी में ठोंकते
और मेरे पूरे चरित्र को देखते हैं। आप मेरे
पांवों की चारों तरफ़ सरहद बान्ध लेते हैं।
28 मैं सड़ी-गली चीज़ की तरह हूँ, जो बर्बाद
हो जाती है। मैं कीड़ा खाए कपड़े की तरह
हूँ।

14 इन्सान का जीवन कुछ दिनों का
और दुख से भरा होता है। 2 फूल
की तरह वह खिलता है और फिर तोड़ लिया
जाता है, वह छाया की तरह ढलता जाता
है, और कहीं ठहरता नहीं है। 3 फिर तुम ऐसे
पर निगाह डालते हो? क्या तुम मुझे अपने
साथ कचहरी में घसीटते हो? 4 कौन अशुद्ध
वस्तु से शुद्ध वस्तु निकाल सकता है? कोई
नहीं। 5 इन्सान के दिन तय किए जा चुके
हैं। उसके महीनों की गिनती आपके पास
लिखी है। आपने उसके लिए ऐसी सरहद
बना दी है, जिसे वह पार नहीं कर सकता।
6 इसलिए उससे अपना मुँह मोड़ लीजिये, कि
वह आराम करे, जब तक कि वह मजदूर
की तरह अपने दिन पूरे न कर ले। 7 पेड़
की तो आशा रहती है, कि चाहे उसे काट
भी डाला जाए, वह फ़िर से पनप जाएगा।
8 चाहे ज़मीन में उसकी जड़ पुरानी भी हो जाए
और ठूंठ मिट्टी में सूख जाए। 9 इसके बावजूद
बरसात आते ही वह फिर से पनप पाएगा।
पौधे की तरह उस से डालियाँ निकल पड़ेंगी।
10 लेकिन इन्सान मरने के बाद पड़ा रहता
है, जान निकल जाने के बाद वह कहाँ रहा?
11 जैसे नील नदी का पानी कम होता जाता
है, जैसे जलाशय का पानी सूखते -सूखते
खत्म हो जाता है, 12 वैसे ही इन्सान लेटने
के बाद उठता नहीं, जब तक आकाश रहेगा
तब तक वह जागने का नहीं और उसकी
नींद नहीं टूटती। 13 भला होता कि आप मुझे
अधोलोक में छिपा लेते और मेरे गुस्से के
शान्त होने तक छिपाए रहते। मेरे लिए एक
समय तय भी करते कि मेरे लिए कुछ करते।
14 मरने के बाद क्या मनुष्य फिर से ज़िन्दा
होगा? जब तक मुझे आज़ादी न मिल जाती,
तब तक मैं अपनी कड़ी मेहनत के सभी दिन
आशा लगाए रहता। 15 आप मुझे पुकारते
और मैं उत्तर देता और आपको अपने हाथ
के बनाए हुए की इच्छा होती। 16 लेकिन
अभी तो आप मेरे कदम-कदम को गिनते
हैं। क्या आप मेरे गुनाह की ताक में नहीं
रहते हैं? 17 मेरे गुनाह मोहर लगी हुयी थैली
में हैं। मेरी बुराईयों को आपने सी दिया है।
18 बेशक पहाड़ भी गिरते-गिरते बर्बाद हो
जाते हैं और चट्टान अपनी जगह से सरक
जाती है। 19 पानी से पत्थर घिस जाते हैं।
ज़मीन की मिट्टी, बाढ़ से बह जाती है। इसी
तरह से आप इन्सान की उम्मीद को मिटा देते
हैं। 20 आप हमेशा उसके ऊपर जीत हासिल
करते हैं। उस का चेहरा बिगाड़ कर उसे आप
निकाल देते हैं। 21 उसके बेटों की बड़ाई
होती है और उसे यह बात मालूम ही नहीं
होती। उन्हें कमी रहती है, लेकिन उसे इस
बात की जानकारी ही नहीं रहती। 22 उसे खुद
की वजह ही से दुख होता है। अपने ही कारण
उसकी जान अन्दर ही अन्दर तड़पती रहती
है।

15 तब तेमानी एलीपज़ ने अपना मुँह
खोला और कहा, “क्या अज्ञानता
के साथ उत्तर देना या अपने विवेक को
पूर्वी हवा से भरना शोभा देता है? 3 क्या
वह बेफ़ायदे की और बेकार की बातों को
करे? 4 तुम तो डर मानना छोड़ देते और
प्रभु का ध्यान करना दूसरों से छुड़ाते हो।

5 तुम अपने मुँह से अपनी बुराई प्रगट करते
हो, और धूर्त लोगों की तरह बोलते हो। 6 मैं
नहीं, लेकिन तुम्हारा मुँह तुम्हें दोषी ठहराता
है। तुम्हारी बातें ही तुम्हारे खिलाफ़ गवाह
हैं। 7 क्या तुम ही पहले इन्सान थे? पहाड़ों
से पहले क्या तुम बनाए गए थे? 8 क्या प्रभु
की सभा में बैठे, तुम सुन रहे थे? क्या तुमने
ही बुद्धि का ठेका लिया हुआ है? 9 तुम्हारे
पास ऐसी कौन सी जानकारी है, जो हमारे
पास नहीं है? ऐसी कौन सी समझदारी तुम्हारे
पास है जो हमारे पास नहीं है? 10 पक्के बाल
वाले लोग हमारे बीच में बुज़ुर्ग होते हैं, जिन
की उम्र तुम्हारे पिता की उम्र से ज़्यादा है।
11 प्रभु की शान्ति देने वाली बातें और जो
कुछ तुम्हारे लिए कोमल है, क्या ये तुम्हारे
देखने में बेकार है? 12 तुम्हारा मन तुम्हें क्यों
खींच ले जाता है और तुम आँखों से इशारा
क्यों करते हो? 13 तुम भी अपनी आत्मा
प्रभु के खिलाफ़ करते हो और अपने मुँह
से बेकार बातें कहते हो। 14 इन्सान क्या है
कि वह बिना किसी बुराई के हो सकता है।
15 देखो, वह अपने पवित्रों पर भी विश्वास
नहीं करता, स्वर्ग भी उसकी दृष्टि में शुद्ध नहीं
हैं। 16 इन्सान घिनौना और गंदा है, वह बुराई
को पानी की तरह पीता है। 17 मैं तुम को
समझा दूँगा, इसलिए मेरी सुन लो, मैंने जो
देखा है उसी का बखान करता हूँ। 18 वे सभी
बातें जिन्हें बुद्धिमानों ने अपने पूर्वजों से सुन
कर बतायी हैं। 19 उन्हीं को देश दिया गया था
और उनके बीच में कोई विदेशी नहीं आता
जाता था। 20 दुष्ट व्यक्ति अपनी जीवन भर
दुख में छटपटाता रहता है। बलात्कारी के
वर्षों की सीमा निश्चित है। 21 उसके कान में
डरावनी आवाज़ गूँजती रहती है। कुशल के
वक्त भी नाश करने वाला उस पर आ पड़ता
है। 22 उसे अन्धेरे में से रोशनी में आने की
फिर आशा नहीं होती है 23 वह खाने के लिए
इधर-उधर मारा-मारा फिरता रहता है। उसे
मालूम होता है कि अन्धेरे का दिन मेरे पास
ही है। 24 परेशानी और दुर्घटना से उसे डर
लगा रहता है। ऐसे राजा की तरह जो युद्ध
के लिए तैयार हो वे उस पर ज़ोरावर होते
हैं। 25 उसने प्रभु के खिलाफ़ हाथ बढ़ाया
है, सर्वशक्तिमान के विरोध में वह चुनौती
रखता है। 26 अपना सिर ऊँचा करके अपनी
मोटी मोटी ढालें दिखाते हुए घमण्ड से उस
पर धावा करता है। 27 इसलिए कि उसके
मुँह पर चिकनाई छायी हुयी है और उसकी
कमर में चर्बी जम गयी है। 28 वह उजाड़े हुए
नगरों में बस गया है, जो घर रहने लायक
नहीं है और खंडहर होने के लिए छोड़ दिए
गए हैं, उन में बस गया है। 29 वह अमीर न
रहेगा और न उसकी दौलत बनी रहेगी। ऐसे
लोगों के खेत की पैदावार ज़मीन की ओर न
झुक पाएगी। 30 वह अन्धेरे से कभी न निकल
पाएगा। उसकी डालियाँ आग की लपट से
झुलस पाएँगी। प्रभु के मुँह की सांस से वह
उजड़ जाएगा। 31 वह खुद को धोखा देकर
बेकार बातों का भरोसा न करे, क्योंकि उस
का बदला धोखा ही होगा। 32 वह उसके तय
किए दिन के पहले पूरा हो जाएगा, उसकी
डालियाँ हरी न रहेंगी। 33 अंगूर की तरह
उसके कच्चे फल झड़ जाएँगे, और उसके
फूल जलपाई के पेड़ से गिरेंगे। 34 क्योंकि
प्रभु के डर में न जीने वाले से कुछ न हो
पाएगा। जो लोग घूस लेते हैं, उनके घर आग
से जल जाएँगे। 35 वे लोग दंगा-फ़साद कराने
में काफी आगे रहते हैं और उनके मन में
धोखा-धड़ी की बातें रहती हैं।

16 तब अय्यूब का जवाब था, 2 “इस
तरह की तमाम बातें मैं सुन चुका

हूँ। तुम सभी फ़ालतू के शान्तिदाता हो। क्या
बेकार की बातें कभी खत्म होंगी? 3 तुम
किस कारण से झिड़क कर जवाब देते हो।
4 यदि तुम्हारी हालत मेरी तरह होती, तो मैं
भी तुम्हारे खिलाफ़ बातें जोड़ सकता, और
तुम्हारे विरोध में सिर हिला सकता। 5 यहाँ
तक कि मैं अपनी बातों से तुम्हें हिम्मत
देता और शान्ति देकर शोक घटा देता। 6 मेरे
बोलने से मेरी वेदना कम न होगी, मेरे खामोश
रहने से भी मेरा दुख कम न होगा। 7 लेकिन
उन्होंने मुझे उकता दिया, मेरे घर को बर्बाद
कर दिया है। 8 मेरी देह को जो उन्होंने सुखा
दिया है, वह मेरे विरुद्ध गवाही है। मेरी
कमज़ोर देह भी मेरे सामने एक गवाही देती
है। 9 गुस्से में आकर उन्होंने मुझे फाड़ डाला
है और मेरे पीछे पड़े हैं। वह मेरे खिलाफ़ दाँत
पीसता है और मेरा दुश्मन मुझे आँख दिखाता
है। 10 अब लोग मुझ पर मुँह पसारते हैं और
मेरी बुराई करके मेरे गाल पर तमाचा मारते
हैं और मेरे विरोध में भीड़ इकट्ठी हो जाती है।
11 कुटिल लोगों के हाथों में प्रभु ने मुझे कर
दिया है और दुष्ट लोगों के हाथों में फेंक दिया
है। 12 मेरे जीवन में सुख था, लेकिन उन्होंने
मुझे पीस डाला, मेरी गर्दन पकड़ कर उसे
टुकड़े-टुकड़े कर डाला। मुझे अपना निशाना
बना कर खड़ा किया है। 13 उनके तीर मेरी
चारों तरफ़ उड़ रहे हैं। बेरहम होकर वह मेरे
गुर्दो को भेदते हैं और मेरे पित्त को ज़मीन
पर बहाते हैं। 14 एक बलवान इन्सान की
तरह वह मेरे ऊपर हमला करके चोट पहुँचाते
हैं। 15 मैंने अपनी खाल पर टाट को सिल
लिया है और अपना सींग मिट्टी में गंदा किया
है। 16 दिन-रात रोने के कारण मेरे चेहरे पर
सूजन आ गयी है 17 फिर मैंने कुछ बुरा नहीं
किया है और मेरी प्रार्थना पवित्र है।" 18 हे
पृथ्वी,"तुम मेरे खून को ढाँकना नहीं, और
मेरा गिड़गिड़ाना कही रूके नहीं" 19 स्वर्ग
में अभी भी मेरे पक्ष में गवाही देने वाले हैं।
20 मुझ से मेरे दोस्त नफ़रत करते हैं, लेकिन
मैं प्रभु के सामने आँसू बहाता हूँ, 21 भला
होता कि कोई मेरे लिये प्रभु से बिनती करता
22 क्योंकि कुछ साल बीतने के बाद मैं उसी
रास्ते से चला जाऊँगा। मैं फिर उससे वापस
न आऊँगा।

17 मेरी जान निकली जा रही है। मेरे
दिन पूरे हो गए हैं। मेरी कब्र भी
तैयार है। 2 मेरे संग जो लोग हैं, वे हँसी
उड़ाने वाले लोग हैं। वे मुझे लड़ते-झगड़ते
दिखते हैं। 3 अपने और मेरे बीच में आप
ही जामिन ठहरें, जमानत दीजिए। कौन है
जो मेरे हाथ पर हाथ मारेगा? 4 आपने इन
लोगों को समझने से रोक रखा है, इसलिए
आप इनको जीतने नहीं देते हैं। 5 जो अपने
दोस्तों को चुगली खा कर लूट लेता है उसके
बच्चों की आँखें रह जाएँगी। 6 उन्होंने ऐसा
किया, कि सभी मेरे मुँह पर थूकते हैं और
मेरा उदाहरण देते हैं। 7 दुख की वजह से मेरी
आँखें धुँधला गयी हैं। मेरे सभी अंग छाया
की तरह हो गए हैं। 8 इसे देख कर सीधे लोग
आश्चर्य से भर जाते हैं। जो लोग बिना किसी
खोट के हैं, वे प्रभु से प्रेम न करने वालों के
खिलाफ़ उठते हैं। 9 फिर भी खरे लोग अपना
रास्ता छोड़ते नहीं हैं, शुद्ध काम करने वाले
ताकत पर ताकत पाते जाएँगे। 10 तुम सभी
मेरे नज़दीक आओ तो आओ, लेकिन तुम
में एक भी अक्लमन्द नहीं मिलेगा। 11 मेरे
दिन जाते रहे और मेरी कामनाएँ भी खत्म
हो गयीं। जो मेरे मन में था, वह बर्बाद हुआ
है। 12 वे रात को दिन कहते हैं और रोशनी
को अन्धकार कहते हैं। 13 यदि मेरी उम्मीद
यह है कि अधोलोक मेरा घर होगा, यदि

मैंने अन्धेरे में अपना बिस्तर बिछा लिया है,
14 यदि मैंने सड़ाहट को अपना पिता और
कीड़े को अपनी माँ और बहन समझा हो,
15 तो मेरी आशा कहाँ रही और कौन मेरी
आशा को देख सकेगा? 16 वह अधोलोक
में उतर जाएगी,और मुझे भी कब्र में आराम
मिलेगा।

18 ,तब शूही बिलदद ने कहा, 2 2"तुम
कब तक जाल बिछा- बिछा कर
बात को पकड़ते रहोगे? ध्यान दो, फिर हम
कहना चाहेंगे। 3 हम लोग तुम्हारी निगाह
में जानवरों की तरह क्यों हैं और अशुद्ध
भी ? 4 अपने गुस्से में फाड़ डालने वाले,
क्या तुम्हारे लिये पृथ्वी बर्बाद हो जायेगी,
और चट्टान अपनी जगह से सरक जाएगी?
5 फिर भी बुरा करने वाले की रोशनी जाती
रहेगी। उसकी आग की लपट चमकेगी नहीं।
6 उसके घर की रोशनी अन्धेरा हो जाएगी
और उसके ऊपर का दीपक बुझ जाएगा।
7 उसके बड़े-बड़े कदम छोटे हो जाएँगे और
वह अपनी योजनाओं की वजह से ही गिरेगा।
8 वह खुद अपना पाँव जाल में फँसाएगा।
9 उसकी एड़ी अटक जाएगी और वह जाल
में फँस जाएगा। 10 फन्दे की रस्सियाँ उसके
लिये ज़मीन में और जाल रास्ते में छिपा दिया
गया है। 11 डरावनी चीज़ें उसे चारों ओर से
डराएँगी और उसे भगाएँगी। 12 दुख के कारण
उसकी ताकत जाती रहेगी। मुसीबत उसके
पास ही मंडराएगी। 13 वह उसके अंग को
खाएगी, यहाँ तक कि काल का पहलौठा
उसके अंगों को खत्म कर डालेगा। 14 अपने
जिस घर पर उस का आसरा था, वह उस
से जाता रहेगा। उसे राजा के पास पहुँचा
दिया जाएगा। 15 जो उसके यहाँ का नहीं है
वह उसके घर में रहेगा। 16 उसकी जड़ सूख
जाएगी और डालियाँ कट जाएँगी। 17 इस
दुनिया में उस का नाम मिट जाएगा और
बाज़ार में उस का नाम सुनाई न देगा। 18 उसे
रोशनी में से अन्धेरे में ढकेला जाएगा,उसे इस
दुनिया में से भगा दिया जाएगा। 19 उसके घर
वालों में से उस का कोई बेटा या परपोता न
होगा, उसके रहने की जगह पर कोई बचेगा
भी नहीं। 20 उस का दिन देख कर पूर्व के लोग
आश्चर्य से भर जाएँगे। पश्चिम के लोगों के रोएँ
खड़े हो जाएँगे। 21 इस में कोई शक नहीं है
कि खराब लोगों के निवास-स्थानों का यह
हाल हो जाता है। जो लोग प्रभु को सचमुच
में नहीं जानते उनके साथ भी ऐसा हो जाता
है।"

19 अय्यूब बोला, 2 "तुम लोग कब
तक मुझे सताते रहोगे और अपनी
बातों से कुचलते रहोगे? 3 तुम लोग बहुत
समय से मेरी बेइज़्ज़ती करते रहे हो।तुम्हें शर्म
आनी चाहिये कि मेरे साथ बेरहमी का बर्ताव
कर रहे हो। 4 मैं मान लेता हूँ कि मैंने भूल की
है,फिर भी वह मेरे नाम पर ही रहेगी। 5 यदि
तुम सच में मेरे खिलाफ़ अपनी बड़ाई करते
हो और सबूत देकर बदनामी करते हो, 6 तो
यह जान लो कि प्रभु ने मुझे गिराया है और
मुझे अपने जाल में फँसा दिया है 7 मैं चिल्लाता
रहता हूँ- उपद्रव,उपद्रव,लेकिन मेरी कोई
सुनता ही नहीं। मदद के लिये मैं गुहार लगाता
रहा हूँ, लेकिन कोई इन्साफ़ नहीं है। 8 उसने
मेरे रास्ते को ऐसा रूँधा है, कि मैं आगे चल
ही नहीं सकता, मेरे रास्तों में अन्धेरा ही
अन्धेरा ही है 9 मेरी सारी शान उन्होंने लूट
ली है और मेरे सिर से ताज उतार डाला है
10 उन्होंने चारों ओर से मुझे तोड़ डाला है
और उन्होंने एक पेड़ की तरह मुझे उखाड़
फेंका है 11 उनका गुस्सा मुझ पर भड़क
उठा है। वह मुझे अपना दुश्मन समझते हैं।

12 उनके दल इकट्ठे होकर मेरे खिलाफ़ मोर्चा
बान्धते हैं और मेरे निवास स्थान के चारों
ओर छावनी बनाते हैं। 13 उन्होंने मेरे भाईयों
को मुझ से दूर किया है। जो मुझे जानते थे, वे
अनजाने से हो गए। 14 मेरे रिश्तेदारों ने मुझे
त्याग दिया है, मुझे जानने वाले अब भूल गए
हैं। 15 जो लोग मेरे घर में रहा करते थे, वे,
और यहाँ तक मेरी दासियाँ भी मुझे आज
पहचानती नहीं हैं। आज मैं उनकी निगाह
में परदेशी हूँ। 16 मेरा दास आज बुलाने पर
उत्तर नहीं देता है। अब मुझे उसके सामने
गिड़गिड़ाना पड़ रहा है। 17 आज मेरी सांस
मेरी पत्नी को और मेरी देह की गंध मेरे
भाईयों को घिनौनी लगती है। 18 मेरे बच्चे भी
मुझे नहीं चाहते हैं। जैसे ही मैं उठने पर होता
हूँ, वे मेरे विरोध में बोलते हैं। 19 मेरे जिगरी
दोस्त मुझे नहीं चाहते हैं। जिन से मैंने प्रेम
किया वे मेरे दुश्मन बन गए हैं। 20 मेरी खाल
और मांस-पेशियाँ हड्डियों से चिपक गये हैं। मैं
बाल-बाल बच गया हूँ। 21 मेरे दोस्तों, मुझ पर
दया करो, क्योंकि मैं प्रभु की मार झेल रहा
हूँ। 22 प्रभु ही की तरह तुम लोग मेरे पीछे क्यों
पड़े हो और मेरे गोश्त से सन्तुष्ट क्यों नहीं
हो गए? 23 अच्छा होता, यदि मेरी बातों को
कोई लिखता और एक किताब बन जाती।
24 लोहे की टाँकी और शीशे से वे हमेशा के
लिए चट्टान पर खोदी जातीं। 25 मुझे भरोसा
है कि मुझे आज़ाद करने वाले ज़िन्दा हैं और
आखिर में वह खड़े हो जाएँगे। 26 अपनी
खाल के इस तरह बर्बाद हो जाने पर भी,
मैं देह में होकर प्रभु को जान सकूँगा। 27 मैं
खुद उन्हें अनुभव करूँगा, कोई दूसरा नहीं,
चाहे मेरा मन अन्दर ही चूर-चूर हो जाए, फिर
भी मेरे अन्दर ईमानदारी-सच्चाई पाई जाती है।
28 तुम लोग जो कहा करते हो कि हम इसे
क्यों तकलीफ़ दें? 29 तुम लोग तलवार[a] से
डरो, क्योंकि सज़ा मिलती है, जिस से तुम्हें
मालूम हो जाए कि इन्साफ़ होता है।”

20 नामाती सोपर ने कहा, 2 मेरा जी तो
चाह रहा है कि मैं जवाब दूँ, इसलिए
मैं जल्दबाजी में बातें करता हूँ। 3 मैंने ऐसा
कुछ सुना है, जिस से मेरी बेइज़्ज़ती हुई है।
मेरा मन, जितनी मुझे समझ है, उस आधार
पर जवाब देता है 4 क्या तुम पुराने समय
से चला आया नियम नहीं जानते हो, जब
इन्सान को दुनिया में रखा गया था ? 5 कि
दुष्ट लोग खुशी मनाना रोक देते और प्रभु
से खाली लोगों की खुशी कुछ थोड़े समय
की होती है। 6 चाहे ऐसे मनुष्य का बड़प्पन
आकाश तक पहुँच जाए और सिर बादलों
तक, 7 फिर भी वह अपनी विष्ठा की तरह
सदा के लिए बर्बाद हो जाएगा। उसे देखने
वाले सवाल पूछेंगे, कि वह गया कहाँ 8 सपने
की तरह वह गायब हो जाएगा, और फिर
किसी को न मिलेगा। रात में देखी हुयी शक्ल
की तरह वह होगा। 9 जिस ने उसे देखा हो,
फिर वह न देख सकेगा। उसकी जगह पर उस
का अता-पता नहीं रहेगा। 10 उसके बाल-बच्चे
गरीबों से मदद मांगेंगे। वह अपना छीना हुआ
सामान वापस कर देगा। 11 उसकी हड्डियों
में जवानी की ताकत भरी हुई है, लेकिन
उसके साथ ही वह मिट्टी में मिल जाएगा।
12 चाहे उसको बुराई अच्छी लगे, और उसे
अपनी जीभ के नीचे छिपा रखे। 13 और वह
उसे बचा रखे और न छोड़े, यहाँ तक कि
अपने तालू के बीच दबा रखे। 14 फिर भी उस
का खाना उसके पेट में पलटेगा। वह उसके
अन्दर नाग का ज़हर बन जाएगा। 15 उसने
जो दौलत निगल ली है, उसे वह उगल देगा।

[a] **19.29** सज़ा

प्रभु उसके पेट में से उसे निकाल देंगे। 16 वह
नागों का ज़हर चूस लेगा, वह करैत के डसने
से मर जाएगा। 17 वह शहद और दही की
नदियों को न देख सकेगा। 18 उसने जिस के
लिए मेहनत की, उसको उसे लौटाना पड़ेगा।
वह उसे निगल न सकेगा। उसकी खरीदी हुई
चीजों से जितनी खुशी मिलनी चाहिए, उतनी
उसे नहीं मिलेगी। 19 क्योंकि उसने गरीबों को
पीस कर छोड़ दिया, उसने घर को छीन
लिया, वह उसको बढ़ा न पाएगा। 20 ढेर
सारी चाहतों की वजह से उसे कभी भी सुकून
नहीं मिलता है। इसलिए अपनी कोई मन को
भाने वाली वस्तु को वह बचा न पाएगा।
21 इसलिए वह भलाई को देखता नहीं रहेगा।
22 काफी दौलत होने के बावजूद वह कमी
महसूस करेगा। तभी सब दुखियों के हाथ
उस पर उठेंगे। 23 उस का पेट भरने के लिए
प्रभु अपना गुस्सा उस पर भड़का देंगे। ऐसा
उसके खाना खाते समय ही होगा। 24 लोहे
के हथियार से वह भाग खड़ा होगा। वह
पीतल के धनुष से मारा जाएगा। 25 उस तीर
को पेट से खींच कर वह निकालेगा। उसकी
चमचमाती नोक पित्त को पार कर पाएगी
और वह डर से काँप जाएगा। 26 उसकी
गढ़ी हुयी दौलत पर अन्धेरा छा जाएगा।
वह ऐसी आग से भस्म होगा जिसे किसी
इन्सान ने फूँका न हो। उसके डेरे में बची
वस्तुएँ उसी से भस्म हो जाएँगी। 27 आकाश
उसकी बुराई को ज़ाहिर करेगा, पृथ्वी उसके
खिलाफ़ खड़ी हो जाएगी। 28 उसके घर की
बढ़त खत्म हो जाएगी। प्रभु के क्रोध के
दिन वह बह जाएगा। 29 प्रभु की ओर से दुष्ट
मनुष्य का हिस्सा, और उसके लिए प्रभु द्वारा
ठहराया हिस्सा यही है।

21 अय्यूब ने कहा 2 "ध्यान से मेरी बातें
सुनो, खामोश हो जाओ 3 मुझे भी तो
कुछ कहने दो, बाद में चाहे तो मेरी हँसी
उड़ाना 4 क्या मैं किसी इन्सान के सामने
गिड़गिड़ाता हूँ? 5 मुझ पर ध्यान दो और
आश्चर्य से भर जाओ। अपनी उँगलियों को
दाँतों तले दबा लो 6 याद करने से मुझ में
घबराहट हो जाती है और देह काँपने लगती
है। 7 बुरा करने वाले ज़िन्दा क्यों रहते हैं?
इन लोगों के बूढ़े होने तक इनकी दौलत
बढ़ती जाती है। 8 उन लोगों के बाल-बच्चे,
नाती-पोते उनकी आँखें के सामने बने रहते
हैं। 9 उनके परिवार में सब ठीक चलता रहता
है। प्रभु उन्हें डाँटते-डपटते नहीं। 10 उनके
जानवर गर्भ धारण करते हैं और गर्भपात नहीं
होता हैं। 11 वे अपने बच्चों को झुण्ड में बाहर
जाने देते हैं और उनके बच्चे नाचते हैं। 12 डफ़
और वीणा और बांसुरी बजाकर खुशी से गाते
हैं। 13 उनके जीवन सुखी रहते हैं। फिर क्षण
भर में पृथ्वी से उठा लिए जाते है। 14 फिर
भी उनकी शिकायत यह रहती है कि प्रभु से
कहते हैं, "हम से दूर हो।" आपको ज़्यादा
जानने के लिए हमारी इच्छा नहीं है। 15 हम
सर्वशक्तिमान की सेवा क्यों करें? उनकी
बड़ाई करने से भी कोई फ़ायदा नहीं। 16 देखो
उनकी भलाई उनके हाथ में नहीं रहती है।
दुष्ट लोगों के ख्याल मेरे पास तक न आएँ।
17 कितनी बार उनका दीपक बुझ जाता है।
उन पर मुसीबत आ पड़ती है। प्रभु गुस्से में
उनको शोक देते हैं। 18 वे लोग हवा से उड़ायी
गयी भूसी और तूफ़ान से उड़ायी गई भूसी की
तरह होते हैं। 19 प्रभु उनकी बुराई की सज़ा
उसकी औलाद के लिए रख देते हैं, उनका
बदला वह उन्हीं को दें, ताकि वह जाने।

20 बुरा करने वाले लोग खुद की आँखों से
अपनी बर्बादी देखने पाएँ। प्रभु के गुस्से में
से वे स्वयं पी लें। 21 जब उनके महीनों की
गिनती पूरी हो गई, तो बाद वाले परिवार से
उस का क्या काम ? 22 क्या प्रभु को कोई
ज्ञान सिखा सकता है? वह तो ऊँचे पदों के
लोगों का भी इन्साफ़ करते हैं। 23 कभी -कभी
स्वस्थ इन्सान बड़े सुकून चैन और सुख में
रहते रहते मर जाता है। 24 उसकी दोहनियां
दूध से और उसकी हड्डियाँ मींग से भरी रहती
है। 25 कुछ लोग ज़िन्दगी भर कुढ़ते रहते हैं
और मर जाते हैं। 26 दोनों तरह के लोग मिट्टी
ही में मिल जाते हैं। कीड़ों से उनकी देह
ढक जाती है। 27 देखो, मैं तुम्हारे सोच-विचार
जानता हूँ। मैं तुम्हारी उन योजनाओं को भी
जानता हूँ, जो मेरे बारे में अन्याय की हैं।
28 तुम पूछते ज़रूर हो, "अमीर का घर कहाँ
रहा? दुष्टों के रहने के घर कहाँ हैं ? 29 लेकिन
क्या तुमने आने-जाने वाले लोगों से पूछा
नहीं? क्या तुम उनके इस विषय के सबूतों
को जानते नहीं हो?" 30 मुसीबतों के लिये बुरे
व्यक्ति को रखा जाता है, महा-प्रलय के समय
के लिये ऐसे लोगों को क्यों बचाया जाता
है? 31 उसके चालचलन के बारे में कौन उस
का सामना करेगा? उसके किए गए कामों
को बदला उसे कौन देगा? 32 उसे कब्र तक
पहुँचाया जाएगा उस कब्र की रखवाली भी
लोग करेंगे। 33 उसे नाले के ढेले सुखदायक
लगते हैं। जिस तरह प्राचीन काल से लोग
मरते आ रहे हैं, भविष्य में भी मरते रहेंगे।
34 तुम जो उत्तर देते हो, उस में झूठ ही झूठ
है। इसलिए तुम मुझे झूठी शान्ति क्यों देते
हो?

22 तब तेमानी एलीपज़ बोला, 2 क्या
इन्सान को प्रभु से फ़ायदा पहुँच
सकता है? जो समझदार है वह अपने फ़ायदे
का ही कारण होता है। 3 क्या तुम्हारे खरे
होने से प्रभु को अच्छा लगता है? 4 वह
तुम्हें डाँटते हैं और तुम से मुकदमा लड़ते हैं।
क्या ऐसी हालत में तुम प्रभु की आराधना
कर सकते हो? 5 तुम्हारे जीवन में क्या बहुत
सी गलत बातें नहीं हैं ? तुम्हारी बुरायी
कहीं खत्म ही नहीं होती। 6 तुमने अपने भाई
का बन्धक बिना किसी कारण रख लिया,
और नंगे इन्सान के कपड़े उतार लिए हैं।
7 थके हुए को तुमने पानी न पिलाया और
भूखे को खाना नहीं दिया 8 जिस में ताकत
थी, उसे ज़मीन मिल गई। जिस आदमी को
इज़्ज़त मिली, वह उस में रहने लगा। 9 तुमने
विधवाओं को खाली हाथ लौटा दिया और
अनाथों की बाहें तोड़ डालीं। 10 इसीलिए
तुम्हारे चारों ओर फन्दे हैं और डर की वजह
से तुम घबरा रहे हो। 11 क्या तुम अन्धेरे
को नहीं देख रहे हो और उस बाढ़ को भी
जिस में तुम डूब रहे हो? 12 क्या प्रभु स्वर्ग
में नहीं हैं ? ऊँचाई में देखो, कि तारे कितनी
ऊँचाई पर हैं 13 फिर तुम कहते हो कि प्रभु
को क्या मालूम, क्या वह गहरे अन्धेरे की
आड़ में होकर इन्साफ़ करेंगे ? 14 वह काली
घटाओं से इतना छिपे रहते हैं कि देख भी
नहीं सकते। वह तो आकाश मण्डल के ऊपर
ही चलते-फिरते हैं। 15 क्या तुम उस पुराने
रास्ते पर चलते रहोगे,जिस पर गलत करने
वाले चलते रहे हैं? 16 वे समय से पहले उठा
लिए गए। उनके घर की नींव नदी के बहाव
में बह गई। 17 प्रभु से ये लोग बोले, "हमारे
पास न रहें।" यह भी कि प्रभु हमारा कर ही
क्या सकते हैं?" 18 इसके बावजूद प्रभु ने
उनके घरों को अच्छी वस्तुओं से भर दिया
लेकिन बुरे लोगों के ख्याल तक मुझ से दूर
रहे। 19 खरे लोग देख कर खुश हो जाते हैं

और जो खरे नहीं है वे उनकी हँसी उड़ाते हैं,
कि 20 जो हमारे खिलाफ़ उठ खड़े हुए थे, वे
सचमुच में बर्बाद हो गए। उनकी दौलत आग
से भस्म हो गई। 21 उस से मेल जोल कर
लो तब तुम्हें शान्ति मिलेगी। इस से तुम्हारी
भलाई ही होगी। 22 उसके मुँह से शिक्षा सुनो
और उन बातों को अपने मन में रख लो।
23 यदि तुम मन बदल कर प्रभु की ओर जाओ
और अपने घर से गलत कामों को दूर कर
दो, तो तुम ज्यों का त्यों कर दिए जाओगे।
24 तुम अपनी कीमती वस्तुओं को मिट्टी पर
यहाँ तक कि ओपीर का कुन्दन भी नालों
के पत्थरों में डाल दो। 25 तब सामर्थी प्रभु
स्वयं तुम्हारी कीमती वस्तु और तुम्हारे लिए
चमकीली चान्दी होंगे। 26 तब सामर्थी प्रभु
तुम्हें सुख देंगे और तुम बिना हिचकिचाहट
अपना चेहरा उनकी ओर कर पाओगे। 27 तुम
उन से बिनती करोगे और वह तुम्हारी सुनेंगे
तुम अपने कहे गए वचन के अनुसार करोगे।
28 जिस बात का तुम इरादा करोगे, वह कर
भी पाओगे। तुम्हारे रास्तों पर रोशनी रहेगी।
29 चाहे समय बुरा हो, तौभी तुम कहोगे,
“सब अच्छा है।” क्योंकि वह नम्र लोगों को
बचाते हैं। 30 जिस ने बुरा किया भी है, उसे
भी वह बचाते हैं अपने सही कामों की वजह
से तुम छुड़ाए जाओगे।

23 तब अय्यूब बोल उठा, 2 मेरा
बड़बड़ाना अब भी नहीं रूक
सकता। मेरी मार मेरे कराहने से ज़्यादा है।
3 अच्छा होता यदि मैं जान सकता कि वह
मिल सकते हैं। 4 उनके सामने मैं अपना
मुकदमा लाता और तमाम सबूत भी देता।
5 मैं यह भी जान सकता कि वह उत्तर में
मुझ से क्या कह सकते हैं। मुझ से वह जो
कुछ कहते, मैं समझ लेता। 6 क्या अपनी
ताकत दिखा कर वह मुझ से मुकदमा लड़ते
? नहीं, वह मेरे ऊपर ज़रूर निगाह करते।
7 सज्जन उन से वाद-विवाद करते। इस तरह
से मैं अपने जज से हमेशा के लिए छूट जाता.
8 देखो मैं आगे जा रहा हूँ, लेकिन वह मिलते
नहीं। मैं पीछे हटता हूँ, लेकिन वह दिखते
नहीं है। 9 जब वह बाईं ओर काम करते हैं
तब मैं देख नहीं पाता हूँ। वह दाहिनी ओर
इस तरह छिप जाते हैं, कि मुझे दिखाई नहीं
देते। 10 लेकिन उन्हें मेरी चाल-चलन का ज्ञान
है। मेरे ताए जाने के बाद मैं सोने की तरह खरा
निकलूँगा। 11 मेरे पैर उनके रास्तों में मज़बूत
रहे। उनके रास्ते पर मैं चलता रहा। 12 उनकी
आज्ञाओं को मैं मानता रहा। उनकी कही
बातों को अपनी इच्छा से ज़्यादा मैंने चाहा।
13 लेकिन वह एक ही बात पर अड़े रहते हैं,
कौन उनको उस से हटा सकता है? जो वह
चाहते हैं, करते हैं। 14 मेरे लिए उन्होंने जो
इरादा कर लिया है, उसे पूरा करते हैं। उनके
मन में ऐसी-ऐसी तमाम बातें हैं। 15 इसलिए मैं
घबरा जाता हूँ, सोचते ही मैं थरथरा जाता हूँ।
16 प्रभु ही ने मेरे मन को कच्चा कर दिया है,
उन्हीं ने मुझे बड़ी परेशानी में डाल दिया है।
17 इसलिए कि मैं इस अन्धेरे से पहले काटा
डाला न गया, और उन्होंने गहरे अन्धेरे को
मेरे सामने से न छिपाया।

24 प्रभु ने समय क्यों नहीं तय किया,
जो लोग उनका ज्ञान रखते हैं, उनके
दिन क्यों नहीं देख पाते ? 2 कुछ लोग अपनी
जायदाद की सरहद को बढ़ाते हैं और छीनी
हुई भेड़-बकरियाँ चराते हैं। 3 वे अनाथों के
गधों को हाँक कर अपने यहाँ ले जाते हैं। वे
विधवा का बैल गिरवीं करके रखते हैं। 4 वे
गरीब लोगों को रास्ते से हटा देते हैं। देश में
रहने वाले गरीबों को छिप जाना पड़ता है।

5 देखो, वे जंगली गधों की तरह अपने काम
को और कुछ खाने को बड़ी कोशिश से ढूँढने
निकल जाते हैं। उनके बाल-बच्चों का खाना
उनको जंगल से मिल जाता है। 6 उनके खेत
में चारा काटना और दुष्टों के बचे -कुचे अंगूर
बटोरने पड़ते हैं। 7 वे रात में बिना कपड़ों के
पड़े रहते हैं। जाड़े के मौसम में बिना ओढ़े
पूरी रात गुज़ारते हैं। 8 पहाड़ की वर्षा से वे
भीगते हैं। सहारा ढूँढते-ढूँढते वे चट्टान से
लिपट जाते हैं। 9 कुछ लोग अनाथ बच्चे को
माँ की छाती से छीन लेते हैं और दीन लोगों
से गिरवीं रखाते हैं। 10 इसलिए वे लोग बिना
कपड़ों के फिरते हैं। भूख के मारे वे पूलियाँ
ढोने का काम करते हैं। 11 उनकी दीवारों के
अन्दर वे तेल पेरते और उनके कुण्डों में अंगूर
रौंदते हुए प्यासे रहते हैं। 12 वे लोग बड़े नगर
में कराहते हैं, ज़ख्मी लोगों का मन दोहाई
देता है, लेकिन प्रभु बेवकूफ़ी का हिसाब नहीं
लेते। 13 कुछ लोग रोशनी से दुश्मनी रखते
हैं, वे उसके रास्तों को नहीं पहचानते, और
न उन रास्तों पर बने रहते हैं। 14 खूनी इन्सान
सुबह होते ही गरीब को मार डालता है और
रात को चोरी करता है। 15 यह सोच कर कि
मुझे कोई देख न सके, व्यभिचारी रात आने
की राह देखता है। वह अपना मुँह छिपाए
भी रखता है। 16 अन्धेरे के वक्त में वे घरों में
सेंध मारते और दिन को छिपे रहते हैं। उन्हें
मालूम नहीं कि रोशनी है क्या। 17 इसलिए
उन सभी को सुबह की रोशनी गहरा अन्धेरा
सी जान पड़ती है। क्योंकि घोर अन्धेरे का
डर वे जानते हैं। 18 वे पानी के ऊपर हल्की
वस्तु की तरह हैं। उनके हिस्से को दुनिया
के लोग कोसते हैं। वे अपने अंगूर के बगीचे
में वापस लौट नहीं पाते। 19 जिस तरह से
सूखे और धूप से बर्फ़ का पानी सूख जाता
है, वैसे ही गुनाहगार अधोलोक में सूख जाते
हैं। 20 माता उसे भूल जाती है और कीड़े उसे
चूसते हैं, आने वाले दिनों में उसे कोई याद
न करेगा। इस तरह गलत काम करने वाला
पेड़ की तरह काट डाला जाता है। 21 बच्चा
न उत्पन्न कर सकने वाली महिला को वह
लूटता और विधवा की भलाई नहीं करता।
22 बलात्कार करने वालों को भी प्रभु अपनी
ओर खींच लेते हैं। जिस ने जीने की इच्छा
छोड़ दी है, वह फिर से उठ कर बैठ जाता
है। 23 वह उन्हें ऐसे निश्चिन्त कर देते हैं, कि वे
सम्भले रहते हैं। उनकी कृपा की नज़र उनकी
चाल चलन पर लगी रहती है। 24 वे बढ़ते हैं,
तब थोड़ी देर में जाते रहते हैं, वे दबाए जाते
और सभी की तरह रख लिये जाते हैं। 25 क्या
यह सभी सच नहीं ? कौन मुझे झूठा ठहरा
सकता है ? कौन मेरी कही हुई बातों को
झूठा ठहराएगा?

25 तब शूही बिलदद बोलने लगा,
2 प्रभुता करना और डराना वही
करते हैं। वह अपनी ऊँची-ऊँची जगहों में
शान्ति रखते हैं। 3 क्या उनकी फौज़ों की
गिनती की जा सकती है? कौन है जिस पर
उनकी रोशनी नहीं पड़ती? 4 फिर इन्सान प्रभु
की निगाह में क्यों अपनाया जा सकता है ?
स्त्री से जन्मा व्यक्ति बेगुनाह कैसे हो सकता
है? 5 देखो, उनकी दृष्टि में चाँद भी अन्धेरा
ठहरता है, तारे भी कुछ मायने नहीं रखते,
6 फिर मनुष्य क्या, जो कीड़े और केंचुए की
तरह है?

26 तब अय्यूब ने जवाब में कहा,
2 कमज़ोर व्यक्ति की आपने मदद
की है, जिस की बांह में ताकत नहीं, उसको
आपने कैसे सम्भाला है? 3 बेसमझ इन्सान
को आपने क्या ही सलाह दी और अपनी

खरी बुद्धि कैसे प्रदान की? 4 किस की भलाई
के लिए आपने बातें कहीं? किस के मन की
बातें आपके मुँह से निकली ? 5 बहुत दिन के
मरे लोग भी जलनिधि और उसके निवासियों
के नीचे तड़पते हैं। 6 अधोलोक उसके सामने
दिखता रहता है और बर्बादी की जगह ढँक
नहीं सकती, 7 वह उत्तर दिशा को बिना
किसी आधार फैलाए रहते हैं, और बिना टेक
पृथ्वी को लटकाए रहते हैं। 8 वह पानी को
काली घटाओं में बाँध रखते हैं और बादल
उसके बोझ से फट नहीं जाता। 9 वह अपने
राजासन के सामने बादल फैलाकर उसको
छिपाए रखते हैं। 10 रोशनी और अन्धेरे के
बीच जहाँ सरहद है, वहाँ तक उन्होंने पानी
की सीमा को ठहरा दिया है। 11 उनकी डाँट
से आकाश के खम्भे थरथरा कर आश्चर्य
करते हैं। 12 वह अपनी ताकत से समुन्दर
को उछालते, और अपनी बुद्धि से घमण्ड को
तोड़ डालते हैं। 13 उनकी आत्मा से आकाश
मण्डल साफ़ हो जाता है, वह अपने हाथ
से तेजी से भागने वाले नाग को मार देते हैं।
14 देखो, ये तो उसकी रफ़्तार के किनारे ही
हैं, और उसकी आहट फुसफुसाहट ही सी
सुनाई देती है। उनके पराक्रम के गरजने का
भेद कौन जान सकता है?

27 और भी गहरी बातें, अय्यूब ने कहीं,
2 "मैं प्रभु के जीवन की कसम खाता
हूँ, जिन्होंने मेरे साथ इन्साफ़ नहीं किया
अर्थात जिन प्रभु ने मेरे जीवन में इतने कड़वे
अनुभव दिए हैं। 3 मेरी सांस अब तक चल
रही है। 4 मैं यह कहना चाहता हूँ कि मेरे मुँह
से कोई बुरी बात नहीं निकलेगी। मैं कपट की
बातें भी नहीं करूँगा। 5 प्रभु न करे, कि मैं तुम
लोगों को सच्चा ठहराऊँ। जब तक मेरी जान
न निकल जाए तक मैं ईमानदारी के रास्ते
पर चलता रहूँगा। 6 मैं सच्चाई, ईमानदारी और
न्याय को थामें रहूँगा। मेरा मन मेरे जीवन
भर मुझ पर इल्ज़ाम लगाएगा। 7 मेरा दुश्मन
दुष्टों की तरह और जो मेरे खिलाफ़ उठाता है
वह दुष्ट की तरह ठहरे। 8 जब प्रभु परमेश्वर
रहित इन्सान की जान चली जाए, तब उसकी
हासिल की हुयी दौलत से क्या आशा होगी?
9 जब वह मुसीबत में फँस जाए, तब प्रभु
क्या उसकी बिनती सुनेंगे? 10 क्या वह प्रभु
में सुख पा सकेगा और किसी भी समय
प्रार्थना कर सकेगा? 11 मैं तुम्हें प्रभु के काम
के बारे में सिखाऊँगा और उनकी बात को
छिपाऊँगा नहीं। 12 देखो, तुम सभी लोग उन्हें
खुद अनुभव कर चुके हो, फिर तुम बेकार
की बातों पर मन क्यों लगाते हो ? 13 प्रभु
की ओर से बुरे मनुष्य[a] का यही हाल होता
है। बलत्कारियों को जो प्रभु से मिलता है,
वह यही है, 14 चाहे उसके बाल-बच्चों की
गिनती बढ़ भी जाए, फिर भी तलवार के
शिकार हो जाएँगे। ऐसे लोगों की औलाद
को पेट भर खाना न मिलेगा। 15 उसके बचे
हुए लोग कब्र तक पहुँचेंगे। उसके यहाँ की
विधवाएँ विलाप नहीं करोगे। 16 चाहे वह
धूल की तरह दौलत इकट्ठा कर ले और मिट्टी
के किनकों की तरह अनगिनित कपड़े इकट्ठे
कर ले। 17 वह उन्हें बनवाएगा तो, लेकिन
खरा इन्सान उन्हें पहनेगा। उसकी दौलत को
निर्दोष लोग आपस में बाँट लेंगे। 18 उसने
अपना घर को कीड़े की तरह बनाया और
खेत की देख-भाल करने वाले की झोपड़ी
के समान बनाया। 19 अमीर होकर वह लेट
जाए लेकिन उसे लोग गाड़ेंगे नहीं। उसकी
आँख खुलते ही वह चल बसेगा। 20 डर की
लहर उसे बहा लेगी रात का बवण्डर उसे

[a] **27.13** अविश्वासी

उड़ा लेगा। 21 वह पुरवाई से उड़ा लिया
जाएगा। वह अपनी जगह में दिखेगा तक
नहीं। 22 इसलिए कि प्रभु बिना तरस खाए
उस पर मुसीबतें डालेंगे। उसकी इच्छा होगी
कि उनके हाथ से वह भाग निकले। लोग
उसे देख कर तुच्छ जानेंगे। 23 उस पर वे ऐसी
सिसकारियाँ भरेंगे, कि वह अपनी जगह पर
न रह पाएगा।

28 चाँदी और सोने की खान होती है,
इन खानों ही से इन्हें निकाला जाता
है। 2 लोहा पृथ्वी में से निकाला जाता है
और पत्थर को पिघला कर पीतल बनाया
जाता है। 3 इन्सान अन्धेरे को दूर कर बहुत
गहराई तक खोदता जाता है। 4 लोगों की
आबादी जहाँ नहीं होती है वहीं ये खानें
खोदी जाती हैं। जहाँ पृथ्वी पर चलने वालों
के पैर तक नहीं पड़ते वे निर्जन सथानों
लटकते हुए झूलते रहते हैं। 5 इस ज़मीन
से खाना तो मिलता है, लेकिन उसके नीचे
की जगह मानो आग से उलट दी जाती है
6 उसके पत्थर नीलमणि की जगह हैं और
उसी में सोने की धूल भी है। 7 उसके रास्ते
को कोई भी मांसाहारी चिड़िया नहीं जानती,
किसी गिद्ध की निगाह उस पर नहीं पड़ी।
8 उस पर घमण्डी जानवरों ने अपने पाँव नहीं
रखे और न उस से होकर कोई शेर गया।
9 वह चकमक के पत्थर पर हाथ लगाते और
पहाड़ों को जड़ से निकाल फेंकते हैं। 10 वह
चट्टान खोद कर नालियाँ बनाते और उसकी
आँखों को हर एक कीमती चीज़ दिखाई
पड़ती है। 11 नदियों को वह ऐसे रोक देते हैं
कि उन से एक बूंद भी पानी नहीं टपकता। जो
कुछ छिपा है उसे वह उजियाले में निकालते
हैं। 12 लेकिन बुद्धि और समझ कहाँ से मिल
सकती है? 13 उसकी कीमत इन्सान क्या
जाने इस दुनिया में वह कहीं नहीं मिलती
है। 14 गहरा समुन्दर कहता है, वह मेरे भीतर
या पास में नहीं है। 15 उसे शुद्ध सोने से नहीं
खरीद सकते, चाँदी से भी यह सम्भव नहीं है।
16 ओपीर के कुन्दन से उसकी बराबरी नहीं
की जा सकती और न ही सुलैमानी पत्थर
या नीलमणि की 17 उसके सामने सोना या
काँच ठहर नहीं सकते, कुन्दन के गहनों से
भी उसे खरीदा नहीं जा सकता है। 18 मूंगा
और स्फ़टिकमणि भी उसके सामने फीके
पड़ जाते हैं 19 कूश देश के पद्मराग उसके
सामने नहीं ठहर सकते हैं न ही उस से शुद्ध
सोने की बराबरी की जा सकती है। 20 फिर
बुद्धि मिलेगी कहाँ? समझ कहाँ पाई जाएगी?
21 वह सभी जीवधारियों की आँखों से छिपी
है आकाश की चिड़ियाँ भी उसे देख नहीं
सकतीं 22 बर्बादी और मौत कहती है, कि
उन्होंने उसके बारे में सुना है। 23 लेकिन प्रभु
उस का रास्ता समझते हैं, उसकी जगह भी
उन्हें मालूम है। 24 उनकी नज़र पृथ्वी की
छोर तक रहती है। पूरे आकाश मण्डल के
नीचे वह देखते रहते हैं। 25 जब उन्होंने हवा
का वज़न ठहराया और पानी को नपुए में
नापा, 26 गर्जन तथा बिजली के लिए मार्ग तय
किया। 27 तब उन्होंने बुद्धि को देख कर उस
का वर्णन किया। और उसे पूरा करके उसकी
पूरी सच्चाई जान ली। 28 तब उन्होंने इन्सान से
कहा, “देखो, प्रभु से डरना बुद्धि की शुरूआत
है और बुराई से दूर रहना ही समझदारी है।”

29 अय्यूब ने और भी मुश्किल बातें
कहनी शुरू की 2 “भला होता कि
मेरी हालत बीते महीनों की सी होती, जब
प्रभु मेरी रक्षा किया करते थे। 3 जब उनके
दीपक की रोशनी मेरे सिर पर रहती थी, तब
मैं उन से रोशनी पाकर अन्धेरे में चला 4 वे
मेरी जवानी के दिन थे, जब प्रभु के साथ मेरी

निकटता[a] एक अनुभव था। 5 उस समय तक
प्रभु मेरे संग रहते थे और मेरे बाल-बच्चे मेरे
आगे पीछे थे। 6 उस समय मैं अपने पैरों को
मलाई से धोता था। मेरे आस-पास की चट्टानों
से तेल बहा करता था। 7 जब जब मैं नगर के
फ़ाटक के बाहर खुली जगह में अपने बैठने
की जगह तैयार करता था, 8 तब-तब जवान
मुझे देख कर छिप जाते थे और बुज़ुर्ग लोग
खड़े हो जाते थे। 9 जज लोग बोलना रोक देते
थे और हाथ से मुँह ढाँक लेते थे। 10 प्रधान
लोग खामोश रहा करते थे और उनकी जीभ
तालू से चिपट जाया करती थी। 11 क्योंकि
जब मेरी खबर लोगों को मिलती थी, तो मेरी
बड़ाई ही किया करते थे। जब कभी कोई
मुझे देखता था, तो मेरे खिलाफ़ गवाही दिया
करता था। 12 क्योंकि मैं गुहार लगाने वाले
गरीब आदमी को और बेसहारा अनाथ को
भी छुड़ाता था। 13 जो बर्बाद होने पर था
वह मुझे आशीर्वाद दिया करता था। विधवा
मेरी वजह से खुशी से गीत गाया करती थी।
14 ईमानदारी और सच्चाई मेरा पहरावा थे। मेरे
इन्साफ़ के काम मेरे लिए बागे और पगड़ी
का काम देते थे। 15 एक समय था, मैं अन्धों
के लिए आँखें और लंगड़ों के लिए पांव
था। 16 गरीबों का मैं पिता था। जिन लोगों
से मेरी जान पहचान न थी, मैं उनके मुकदमे
के बारे में भी पूछ-ताछ किया करता था।
17 बुरे लोगों की दाड़ों को तोड़ डाला करता
था। उनका शिकार उनके मुँह से छीन लिया
करता था। 18 उस समय मेरी सोच यह थी कि
मैं इस दुनिया में बहुत समय तक ज़िन्दा रहूँगा
और मेरे घर में ही मेरी जान निकलेगी। 19 मेरी
जड़ पानी की ओर फैली और मेरी डाली पर
रात भर ओस गिरती रही। 20 मेरी शान ज्यों
की त्यों बनी रहेगी और मेरा धनुष मेरे हाथ में
हमेशा नया होता जाएगा। 21 लोग अपने कान
मेरी ओर लगा कर ठहरे रहते थे। सलाह सुन
कर वे खामोश रहते थे। 22 मेरे बोलने तक वे
शान्त रहते थे, मेरी बातें उनके ऊपर बारिश
की तरह होती थीं। 23 जिस तरह से लोग
बरसात की राह देखते हैं, वे मेरा इन्तज़ार
करते थे ठीक वैसे जिस तरह आखिर की
बारिश के लिए लोग मुँह पसारे रहते थे।
24 जब वे अपने जीवन में हिम्मत छोड़ देते
थे, तब मैं उन्हें हँसाता था। मेरे मुँह को कोई
बिगाड़ भी नहीं सकता था। 25 उनका रास्ता
मैं चुन लेता था। मैं उन में खास समझा जाता
था और बैठाया जाता था। जिस तरह फ़ौज में
राजा या रोने वालों में शान्ति देने वाला होता
है, ऐसा मैं भी था।

30 अब ऐसा समय आ गया है कि मेरी
उम्र से कम उम्र के लोग मेरा मज़ाक
उड़ाते हैं। ऐसे लोग जिन के पिता को मैं अपने
मवेशी चराने के लायक भी नहीं समझता था।
2 उनके हाथों की ताकत से मेरा क्या फ़ायदा
हो सकता था? उनकी ज़िन्दा-दिली जाती रही
3 गरीबी और कमी के कारण वे कमज़ोर हो
गए हैं। वे अन्धेरी और सुनसान जगहों में
सूखी धूल फाँकते हैं। 4 झाड़ी के आस-पास
का साग तोड़ लेते और झाऊ की जड़ें खा
लेते थे। 5 लोगों के बीच में से वे निकाले जाते
थे। उनके पीछे ऐसी चिल्लाहट होती थी, जैसे
चोर के पीछे। 6 उन्हें डरावने नालों में, ज़मीन
के बिलों में और चट्टानों में रहना पड़ता था।
7 वे झाड़ियों के बीच रेंकते और बिच्छू पौधों
के नीचे पड़े रहते हैं। 8 वे बेवकूफ़ और नीच
लोगों के वंश के हैं। इन लोगों को मार-मार
के यहाँ से निकाला गया था। 9 इस तरह के
लोग अब मुझ पर लगते हुए गीत गाते हैं और
ताना भी मारते हैं। 10 मुझ से वे घिन करते हैं

[a] **29.4** दोस्ती

और मुँह पर थूकते भी हैं। 11 प्रभु ने मेरी रस्सी
खोलकर मुझे दुख दिया है। इसलिए वे मेरे
साम्हने मुँह पर लगाम नहीं लगाते। 12 मेरी
दाहिनी बाजू पर फ़ालतू लोग खड़े होकर
मेरे पाँव सरका देते हैं और मेरी बर्बादी के
लिए योजना बनाते हैं। 13 जिन लोगों का कोई
मददगार नहीं है, वे मेरे मार्गों को बिगाड़ते हैं।
वे लोग मेरी मुसीबतों को बढ़ा देते हैं। 14 जैसे
कि बड़े छेद से होकर वे आ जाते हों और
उजाड़ के बीच ही में मुझ पर धावा बोल देते
हों। 15 मेरे अन्दर घबराहट हो रही है। मेरी
अमीरी मानो हवा से उड़ायी गयी है। बादल
की तरह मेरे अच्छे दिन जाते रहे। 16 मैं दुख
के समुन्दर में डूब रहा हूँ। दुख के दिनों ने
मुझे जकड़ लिया है। 17 रात को मेरी हड्डियाँ
दुखती हैं। मेरी नसों में भी मुझे चैन नहीं है
18 बीमारी के कारण मेरे कपड़ों का रंग रूप
बदल गया है। वह कुर्ते के गले की तरह मुझ
से लिपटी हुयी है। 19 उसने मुझे कीचड़ में
फेंक दिया है। मैं मिट्टी और राख की तरह हो
गया हूँ। 20 मैं गिड़गिड़ाता हूँ, लेकिन आप
सुनते नहीं, मैं जब खड़ा होता हूँ आप मुझे
घूरते हैं। 21 आप बदल गए हैं और मेरे लिए
सख्त दिल भी, आप अपने ताकतवर हाथ
से पीड़ा देते हैं। 22 आप मुझे हवा पर सवार
करके उड़ाते हैं और आन्धी के पानी में
मुझे गला देते हैं। 23 मुझे यकीन है कि आप
मुझे मौत के हवाले कर देंगे। आप मुझे उस
घर में पहुँचाएँगे, जो सभी ज़िन्दा लोगों के
लिए है। 24 फिर भी क्या कोई गिरते समय
सहारा नहीं देगा ? क्या मुसीबत के वक्त कोई
गिड़गिड़ाएगा नहीं? 25 जो लोग बुरे समय में
से गुज़रते थे, क्या मैं उनके लिए आँसू नहीं
बहाता था? 26 जब मैं अच्छे दिन की कामना
करता था, तभी मुसीबत आ जाती थी। जब
मैं रोशनी का इन्तज़ार करता था, अन्धेरा छा
जाता था। 27 मेरी आँतें हमेशा उबलती रहती
हैं और उन्हें आराम नहीं है। मेरे दुख के दिन
आ चुके हैं। 28 मैं दुख के कपड़े पहने हूँ।
ऐसा लगता है,मानो सूरज की गरमी से काला
हो गया हूँ। मैं सभा में खड़ा होकर मदद के
लिए भीख मांगता हूँ। 29 मैं गीदड़ों का भाई,
और शुतुरमुर्ग का साथी हो गया हूँ। 30 मेरी
खाल काली हो गयी है और निकलती जा
रही है। मेरी हड्डियाँ जल चुकी हैं। 31 इसलिए
मेरी वीणा और बांसुरी से भी रोने की आवाज़
निकलती है।

31 अपनी आँखों के बारे में मैंने एक
इरादा कर लिया था, फिर मैं किसी
कुँवारी पर अपनी आँखें क्यों लगाऊँ।
2 क्योंकि प्रभु स्वर्ग से कौन सा अंश और
सर्वशक्तिमान कौन सी दौलत बाँटते हैं?
3 क्या वह बुरे लोगों के लिए मुसीबत और
बेकार का काम करने वाले लोगों के लिए
बर्बादी का कारण नहीं हैं? 4 क्या वह मेरे
चालचलन को नहीं जानते हैं? क्या मेरे हर
हर कदम को वह नहीं जानते हैं? 5 यदि मैं
गलत जीवन जीता हूँ या कपट का जीवन
जीता हूँ, 6 तो मुझे सच्चे तराजू से तौला जाए,
ताकि यह जान सकें कि मैं कितना सच्चा हूँ।
7 यदि मेरे कदम बहक गए हों और मेरा मन
आँखों के वश में हो या मेरे हाथ से कुछ गलत
हुआ हो, 8 तो मैं बीज बोऊँ और दूसरे लोग
काटें। यहाँ तक कि मेरे खेत की फसल काट
डाली जाए। 9 यदि मेरा मन किसी महिला पर
लग गया था और मैं उसके पति को मार
डालना चाहता था, 10 तो मेरी पत्नी दूसरे
के लिए पीसे और दूसरे आदमी उसके साथ
बलात्कार करें। 11 क्योंकि वह बड़ा अपराध
होगा और जजों से सज़ा पाने के लायक बुरा
काम। 12 क्योंकि वह ऐसी आग है जो जला

कर रख देती है और मेरी सारी उपज को जड़
से बर्बाद कर देती है। 13 जब मेरे गुलामों ने
मुझ से लड़ाई की, तब यदि मैंने उनका हक
मारा हो, 14 तो जब प्रभु न्याय करेंगे और जब
वह आएँगे, तो मैं क्या जवाब दूँगा। 15 क्या
जिन्होंने उसे बनाया, मुझे नहीं बनाया? हम
दोनों की सूरत बनाने का काम क्या उन्हीं
का नहीं ? 16 यदि मैंने गरीबों की ज़रूरत
पूरी नहीं की, या विधवा की मदद नहीं की
17 या मैंने अपना खाना खुद खाया। और उस
में से अनाथ को न खिलाया हो, 18 लेकिन
बचपन ही से वह मेरे साथ इस तरह पला,
जिस तरह पिता के साथ।यही नहीं, मैं पहले
ही से विधवा को पालता आया हूँ। 19 यदि
मैंने किसी नंगे को कपड़े न पहनाए हों और
वह मरने के निकट हो, या ऐसे गरीब आदमी
की परवाह न की हो, जिस के पास ओढ़ने
के लिए कुछ न था, 20 और उसे अपनी भेड़ों
का ऊन न दिया हो और उसने गर्म होकर
मुझे सराहा न हो। 21 यदि मैंने अपने अहाते
में अपने मददगार देख कर, अनाथों को मारने
की कोशिश की हो, 22 तो मेरे हाथ, कन्धे के
पास से उखड़ जाएँ और मेरे हाथ की हड्डी
टूट जाए। 23 प्रभु के कारण मैं ऐसा कर ही
नहीं सकता था। मैं प्रभु की ओर से आने
वाली मुसीबत से डरता था। 24 यदि मैंने सोने
पर भरोसा किया होता या कुन्दन पर निगाह
टिकायी होती, 25 या अपनी बड़ी दौलत से या
बड़ी कमाई से ऍश किया होता। 26 या सूरज
को चमकते या चान्द को शान से चलते देख
कर, 27 मैं मन ही मन खुश हुआ होता और मुँह
से अपना हाथ चूम लिया होता। 28 तो यह भी
जज लोगों से सज़ा के लायक अपराध होता,
क्योंकि ऐसा करके मैंने प्रभु का इन्कार किया
होता। 29 यदि मैं अपने दुश्मन की बर्बादी से
खुश हुआ होता, या उसकी मुसीबत के समय
हँसा होता, 30 लेकिन न मैंने उसके नुकसान
के शब्द कहे और न ही उसके मरने के लिए
बिनती की। 31 यदि मेरे घर पर रहने वालों
ने यह न कहा होता, कि ऐसा व्यक्ति कहाँ
मिलेगा, जो यह कहे कि इसके यहाँ का
भोजन करके कौन सन्तुष्ट न हुआ। 32 किसी
परदेशी को सड़क पर रहने की ज़रूरत नहीं
थी, क्योंकि मेरे घर के दरवाज़े ऐसे लोगों
के लिए खुले रहते थे। 33 यदि मैंने आदम
की तरह अपने गुनाह को छिपाया होता।
34 इसलिए, क्योंकि मुझे बड़ी भीड़ से डर
लगता था, या अमीर लोगों द्वारा शर्मिन्दा
किए जाने से डरा, यहाँ तक कि घर से बाहर
न निकला। 35 भला होता यदि किसी ने मेरी
सुनी होती। अच्छा होता कि मेरे मुद्दई ने जो
मेरे खिलाफ़ शिकायत दर्ज की है, वह मेरे
पास होती। 36 मैं उस दस्तावेज़ को अपने
कन्धे पर उठाए फिरता। मैं उसे सुन्दर पगड़ी
की तरह सिर पर रखता। 37 मैं अपने हर एक
कदम का उसको हिसाब देता। मैं उसके पास
एक अधिकारी की तरह बिना डर के जाता।
38 यदि मेरी ज़मीन मेरे खिलाफ़ गवाही देती
हो और उसकी रेघारियाँ मिल कर रोती हों,
39 यदि मैंने अपने खेत में काम करने वालों
को मज़दूरी न दी हो, या उसके मुखिया की
जान ली हो, 40 तो गेहूँ के बदले झड़बेरी और
जौ के बदले जंगली घास उगे। अय्यूब की
कही बातें यहाँ खत्म हुयीं।

32 यह देख कर कि अय्यूब अपने आप
को निर्दोष मान रहा है, उसके दोस्तों
ने उसे जवाब देना बन्द कर दिया। 2 तभी
बूज़ी बारकेल के बेटे एलीहू को गुस्सा आ
गया। इसका कारण यह था कि अय्यूब ने
प्रभु को नहीं अपने को निर्दोष साबित करना
चाहा था। 3 वह अय्यूब और तीनों दोस्तों से

भी गुस्सा हो गया, क्योंकि वे अय्यूब को
जवाब न दे सके,फिर भी उसे दोषी साबित
किया। 4 एलीहू अपने आप को उन से छोटा
समझता था, इसलिए इन्तज़ार करता रहा कि
अय्यूब बातें करना बन्द करे। 5 जब एलीहू ने
देखा, कि ये तीनों आदमी कुछ कह नहीं रहे
हैं, गुस्से में आ गया। 6 तब एलीहू ने अपना
मुँह खोला और कहा,"मैं अभी जवान हूँ,
लेकिन तुम बूढ़े हो, इसलिए मैं अब तक
इन्तज़ार करता रहा। 7 मैं यह चाह रहा था
कि जो उम्र और अनुभव में मुझ से बड़े है, वे
ही बोलें 8 इन्सान में आत्मा है। प्रभु ही उसे
समझने की योग्यता देते हैं। 9 जो अक्लमन्द
हैं, वे बड़े- बड़े लोग ही नहीं होते और न ही
कानून के जानकार बुज़ुर्ग होते हैं। 10 इसलिए
मेरी भी सुनो, मैं भी अपना मत बतलाऊँगा।
11 तुम लोगों की मैं अब तक सुनता रहा हूँ।
तुम्हारे सबूत मैं सुनना चाहता था। तुम लोग
कहने के लिए शब्दों की तलाश में थे। 12 मन
लगा कर मैं तुम्हारी सुन रहा था। किसी ने
भी अय्यूब की बातों को गलत नहीं ठहराया
और न ही उसकी बातों का जवाब दिया।
13 तुम लोग इस गलतफ़हमी में न रहो, कि
तुम्हारे पास जो बुद्धि है, उसको इन्सान नहीं
प्रभु ही गलत ठहरा सकता है। 14 जो बातें
उसने बोलीं, वे मेरे खिलाफ़ नहीं थीं। न ही
मैं तुम्हारी तरह उत्तर दूँगा। 15 वे घबरा गए
और फिर कुछ न कहा। उन्होंने बातें करना
भी छोड़ दिया। 16 इसलिए कि वे कुछ नहीं
बोलते और खामोश खड़े हुए हैं, क्या इसी
कारण मैं इन्तज़ार करूँ। 17 लेकिन मैं भी
कुछ कहना चाहूँगा। 18 मेरे मन में ढेर सी बातें
हैं। मेरी आत्मा मुझे उभार रही है। 19 मेरा मन
उस बोतल में रखे दाखमधु की तरह है जिसे
खोला न गया हो। वह नई मश्कों की तरह
फटना चाहता है। 20 मैं मुँह खोलूँगा, ताकि
मुझे शान्ति मिले और मैं जवाब भी दूँगा। 21 मैं
किसी आदमी की तरफ़दारी में न बोलूँगा
और न ही चापलूसी करूँगा, 22 क्योंकि मैं
चापलूसी नहीं जानता हूँ। यदि ऐसा होता तो
प्रभु मुझे एक पल में उठा लेते।

33 फिर भी हे अय्यूब मेरी बातें सुनो
और ध्यान से सुनो। 2 मैंने अपना
मुँह खोल दिया है, मेरी जीभ मेरे मुँह में
उथल-पुथल मचाए है। 3 मेरी बातें मेरे मन की
सिधाई दिखाती हैं। अपने ज्ञान को ईमानदारी
और सच्चाई से बताऊँगा। 4 प्रभु के आत्मा ने
मुझे बनाया है। इन्हीं की सांस से मेरे पास
जीवन है। 5 यदि तुम मुझे जवाब दे सकते हो,
तो दो। तरतीब से मेरे साम्हने अपनी बातों को
रखो। 6 देखो, मैं प्रभु के सामने तुम्हारी तरह
ही हूँ। मैं भी मिट्टी का बना हूँ। 7 सुनो, मेरे
डर की वजह से तुम्हें घबराना नहीं पड़ेगा
और न ही तुम मेरे बोझ से दबोगे। 8 इस में
सन्देह नहीं कि मेरे कानों में ऐसी बात पड़ी
है। मैंने तुम्हें यह कहते सुना है, 9 "मैं पवित्र,
बेगुनाह और बेदाग हूँ और मुझ में कोई बुराई
नहीं है। 10 देखो, वह मुझ से लड़ाई करने
के बहाने ढूँढता है और मुझे अपना दुश्मन
समझता है। 11 मेरे दोनों पाँवों को वह लकड़ी
में ठोक देता है। वह मेरे सारे चालचलन को
देखता है। 12 देखो, मैं तुम्हें उत्तर देता हूँ, इस
बात में तुम ईमानदार नहीं हो, क्योंकि प्रभु
मनुष्य से कहीं अधिक बड़े हैं 13 तुम उन से
झगड़ा क्यों करते हो? अपनी किसी बात का
हिसाब वह नहीं देता है। 14 प्रभु एक बार ही
नहीं दो बार बोलते है, लेकिन लोग उस पर
ध्यान नहीं देते हैं 15 रात के समय सपने या
दर्शन में, जब इन्सान नींद में होता है, 16 वह
तब लोगों के कान खोलते हैं और उनकी
शिक्षा पर मोहर लगाते हैं। 17 जिस से वह

मनुष्य को उसके प्रण करने से रोक लेंऔर
उस में से घमण्ड दूर करे। 18 वह गड्ढे से
उसकी जान को बचाता है। वह उसको मार
से बचाते हैं। 19 उस का अनुशासन भी होता
है और वह बिस्तर पर पड़ा तड़पता रहता
है। 20 यहाँ तक कि उस का मन खाना खाने
से और मज़ेदार खाने से भी नफ़रत करता है।
21 उसकी देह ऐसी सूख जाती है कि दिखती
ही नहीं। उसकी हड्डियाँ पहले दिखती नहीं
थी लेकिन अब दिखती हैं। 22 उस का जीवन
बर्बाद करने वालों के अधिकार में हो जाता है
और अन्त में वह कबर तक पहुँच जाता है।
23 यदि उसके लिए कोई मध्यस्थ स्वर्गदूत
मिले, जो हज़ार में से एक हो और भविष्य
की बातें बता सकता हो। ऐसा जन जो इन्सान
को सलाह दे सके, कि ठीक क्या है। 24 तो
वह उस पर दया करके कहता है, कि उसे
गड्ढे में जाने से बचा ले, मुझे छुड़ौती मिली
है। 25 तब उस व्यक्ति की देह बच्चे की देह
से अधिक स्वस्थ और कोमल हो जाएगी।
उसकी जवानी का समय भी वापस लौट
आएगा। 26 वह प्रभु से प्रार्थना करेगा और
वह उस से खुश होगा वह प्रभु की मौजूदगी
का भी आनन्द उठाएगा। और प्रभु मनुष्य को
ज्यों का त्यों कर देंगे। 27 वह लोगों के सामने
गीत गाने लगता है और कहता है, “मैंने प्रभु
की इच्छा के खिलाफ़ काम किया है और
सच्चाई में मिलावट की है। लेकिन उस का
बदला मुझे नहीं दिया गया। 28 मुझे मरने से
उन्होंने बचाया है। मैं रोशनी देखूँगा 29 देखो,
ऐसे ऐसे सभी काम प्रभु इन्सान के साथ
दो बार क्या, तीन बार करते हैं। 30 ताकि
उसे कब्र में जाने से बचाया जा सके और
वह जीवन लोक की रोशनी पाता रहे। 31 हे
अय्यूब, ध्यान से सुनो और खामोश रहो।
अब तुम मुझे बोलने दो। 32 अगर तुम्हें कहना
है तो मुझे उत्तर दो। बोलो, क्योंकि मैं तुम्हें
बेदाग ठहराना चाहता हूँ 33 यदि नहीं, तो तुम
मेरी सुनो, चुप रहो, मैं तुम्हें बुद्धि की बातें
सुनाऊँगा।

34 फिर एलीहू यों कहता गया, 2 “हे
बुद्धिमानो, मेरी सुनो और हे ज्ञानियो,
मेरी बात पर ध्यान दो 3 क्योंकि जैसे जीभ से
चखते हैं, वैसे ही बातों को कान से परखा
जाता है। 4 जो सही है वही हमें चुनना चाहिए।
जो अच्छा है, हम समझ-बूझ लें। 5 क्योंकि
अय्यूब का कहना है, “मैं बे-गुनाह हूँ और
प्रभु ने मेरा हक छीन लिया है। 6 हालांकि
मैं सच्चाई पर टिका हूँ, फिर भी झूठा समझा
जाता हूँ। मैं बेगुनाह हूँ लेकिन फिर भी मेरा
ज़ख्म ठीक न होने वाला है।” 7 अय्यूब की
तरह कौन शक्तिशाली है जो प्रभु की बेइज्ज़ती
पानी की तरह पीता हो। 8 जो बेकार के काम
करने वालों का साथ देता और दुष्ट लोगों
के संग रहता है, 9 उसने कहा है, कि इन्सान
को इस से कोई फ़ायदा नहीं, कि वह खुशी
से प्रभु से सहभागिता रखे। 10 इसलिए हे
समझ वालो, मेरी बात सुनो, यह हो नहीं
सकता कि प्रभु गलत काम या बुराई करे।
11 जो इन्सान करे, उस का नतीजा उसे दिया
जाता है। हर एक को अपने चाल चलन
का परिणाम भुगतना पड़ता है। 12 इसमें कोई
शक नहीं है कि प्रभु बुरा नहीं करते हैं और
न ही बेइन्साफ़ी 13 इस पृथ्वी को किस ने
उनके सुपुर्द कर दिया है ? या पूरी दुनिया का
इन्तज़ाम किस ने किया? 14 यदि वह इन्सान
से अपना मन फेर लें और अपनी आत्मा तथा
सांस समेट लें, 15 तो सभी जीवित प्राणी एक
साथ बर्बाद हो जाएँगे और इन्सान मिट्टी में
मिल जाएगा। 16 इसलिए इसे समझो और
ध्यान दो 17 जो इन्साफ़ का दुश्मन हो, क्या

वह राज्य कर सकेगा? जो पूरी तरह से
ईमानदार और सच्चा है उसे बेईमान और झूठा
कौन ठहरा सकता है? 18 वह राजा को नीच
कहता है और प्रधानों को दुष्ट। 19 प्रभु ऊँचे
पद वालों की तरफ़दारी नहीं करते हैं। उनके
लिए अमीर-गरीब में कोई अन्तर नहीं हैं।
20 एक क्षण में आधी रात में उनकी जान
निकल जाती है। प्रजा के लोग हिलाए जाते
हैं और वे जीवित नहीं रहते। ताकतवर और
नामी लोग बिना हाथ लगाए उठा लिए जाते
हैं। 21 प्रभु की आँखें मुनष्य के चालचलन
पर लगी रहती हैं। 22 ऐसा घोर अन्धेरा कहीं
नहीं है, जिस में अनुचित करने वाले अपने
आप को छिपा सकें। 23 उन्होंने इन्सान का
कोई वक्त नहीं ठहराया है, ताकि वह प्रभु के
सामने अदालत में खड़ा हो। 24 बिना किसी
पूछ-ताछ वह बड़े-बड़े ताकत वाले लोगों को
चूर कर डालते हैं और उनकी जगह दूसरों
को ले आते हैं। 25 इसलिए कि उनके कामों
को वह अच्छी तरह जानते हैं, रात में उन्हें
वह इस तरह उलट देते हैं, कि वे चूर-चूर
हो जाते हैं। 26 उन्हें दुष्ट जान कर, लोगों
के देखते-देखते मारते हैं 27 इसलिए, क्योंकि
लोगों ने उनकी इच्छा के अनुसार जीना छोड़
दिया हैं। उनकी राहों पर उन लोगों ने अपना
मन न लगाया। 28 यहाँ तक कि उनके कारण
गरीबों का गिड़गिड़ाना उन तक पहुँच गया।
उन्होंने गरीबों की पुकार को सुना। 29 जब
वह लोगों को चैन देते हैं, तो इसके लिए कौन
उन्हें बुरा कह सकता है? जब वह अपना
मुँह मोड़ लें, तो कौन उनकी मौजूदगी को
हासिल कर सकता है? सभी के साथ उनका
बर्ताव एक सा है। 30 ताकि प्रभु रहित व्यक्ति
शासन जारी न रख सके और देश के लोग
जाल में न फँसे। 31 क्या आज तक किसी
ने कहा, "मुझे सज़ा मिली अब आगे से मैं
गलत नहीं करूँगा। 32 जो बातें मुझे समझ
में नहीं आती है, वह आप मुझे सिखा दें,
यदि मैंने गलत किया हो, तो बाकी जीवन
में ऐसा नहीं करूँगा। 33 क्या वह आपके मन
के अनुसार ही बदला पाए, क्योंकि आप उसे
से खुश नहीं हैं। इसलिए भी क्योंकि फ़ैसला
आप का है। इसलिए जो कुछ आप ठीक
समझते हैं, कह दीजिए। 34 सभी ज्ञानी लोग
और बुद्धिमान जो मेरी सुन रहे हैं, मुझ से
कहेंगे, 35 "अय्यूब समझदारी के बातें नहीं
करता है। अय्यूब के मुँह से ज्ञान की बातें नहीं
निकलती हैं। 36 अच्छा नहीं था कि अय्यूब
अन्त तक परखा जाता, क्योंकि उसने बिना
मतलब के जवाब दिए हैं। 37 वह अपने गुनाह
में खिलाफ़त करता है और हमारे बीच ताली
बजाता है और प्रभु के खिलाफ़ बहुत सी बातें
करता है।"

35 एलीहू इस तरह कहता गया,
2 "क्या तुम इसे अपना अधिकार
समझते हो? क्या तुम यह दावा कर सकते
हो, कि प्रभु से ज़्यादा तुम अच्छे हो? 3 तुम जो
कहते हो, कि मुझे इस से क्या फ़ायदा? और
गुनाह की ज़िन्दगी तथा सही जीवन में क्या
अन्तर है? 4 तुम्हें और तुम्हारे साथियों को
मैं जवाब देता हूँ। 5 आकाश की ओर आँखें
उठाओ और आकाश मण्डल को ताको, जो
तुम से ऊँचा है। 6 यदि तुमने अपराध किया है
तो प्रभु को इस से क्या नुकसान है? यदि इन
अपराधों की गिनती बढ़ भी जाए, तौभी क्या
? 7 यदि तुम्हारा जीवन चरित्र सही है, तौभी
उन्हें क्या देख सकते हो या उन्हें तुम्हारे हाथ
से क्या मिल सकता है? 8 तुम्हारी बुराई का
परिणाम तुम जैसे लोगों के लिए है। तुम्हारी
ईमानदारी और सच्चाई का नतीजा भी यही
है। 9 शोषण और अन्धेर की वजह से वे

चिल्लाते हैं, और ताकतवर की ताकत की
वजह से वे गिड़गिड़ाते हैं। 10 इसके बावजूद
कोई यह नहीं कहता कि मुझे बनाने वाले
प्रभु कहाँ हैं, जो रात के समय भी गीत गवाते
हैं। 11 और हमें जानवरों से ज़्यादा सीख देते
हैं और आकाश में उड़ने वाली चिड़ियों से
अधिक बुद्धि देते हैं। 12 वे गिड़गिड़ाते हैं,
लेकिन खामोशी ही खामोशी है। ऐसा खराब
लोगों के घमण्ड के कारण है। 13 ज़रूर ही
प्रभु बेकार की बातें कभी नहीं सुनते न ही
उस पर ध्यान देते हैं। 14 फिर तुम कहते हो
कि वह मुझे अपनी मौजूदगी की आशीष नहीं
देते कि यह मुकदमा उनके सामने है और तुम
उनका इन्तज़ार कर रहे हो। 15 लेकिन उन्होंने
अभी गुस्से में आकर सज़ा नहीं दी है और
घमण्ड पर ध्यान नहीं दिया है। 16 इसलिए
अय्यूब बेकार ही में बेकार की बातें करता
है।

36 एलीहू फिर कहता है, 2 जरा ठहरो
और मैं तुम्हें समझाता हूँ। प्रभु की
सच्चाई के बारे में मैं कुछ कहना चाहूँगा।
3 अपने ज्ञान की बात मैं दूर से ले आऊँगा
और अपने बनाने वाले को निर्दोष बताऊँगा।
4 मैं झूठ नहीं कहूँगा। जो तुम्हारे साथ है, वह
सब जानता है। 5 देखो प्रभु शक्तिशाली हैं और
किसी को नीचा या कम नहीं समझते हैं। वह
समझ से भरपूर हैं। 6 वह दुष्टों को ज़िन्दा नहीं
रखते हैं। वह गरीबों को उनका हक देते हैं।
7 वह सच्चे, ईमानदार लोगों को देखना बन्द
नहीं कर देते हैं लेकिन उन्हें राजाओं के साथ
हमेशा के लिए राज गद्दी पर बैठाते हैं और वे
ऊँचा पद हासिल करते हैं। 8 चाहे उन्हें जकड़
कर रखा गया हो और दुख की रस्सियों से
बान्धे जाएँ, 9 फिर भी प्रभु उन पर उनके काम
और उनका यह अपराध प्रगट करते हैं, कि
उन्होंने घमण्ड किया है। 10 उनके कान वह
सीखने के लिए खोलते हैं। वह आदेश देते हैं
कि लोग बुराई से बचे रहें। 11 यदि वे सुन कर
उनकी सेवा करें, तो उनके लिए भला होगा।
12 यदि वे न सुनें, तो उनके लिए बर्बादी है
और अज्ञानता में चल बसते हैं। 13 लेकिन वे
जो मन ही मन प्रभु रहित होकर क्रोध बढ़ाते
हैं, और जब वह उनको बान्धते हैं, तब
भी प्रार्थना नहीं करते। 14 वे जवानी में चल
बसते हैं। उनकी ज़िन्दगी लुच्चों के साथ खत्म
हो जाती है। 15 दुखी लोगों के दुख से वह
छुड़ाते हैं। उपद्रव में वह उनका कान खोलते
हैं। 16 लेकिन वह तुम्हें दुख से छुड़ा कर,
ऐसी चौड़ी जगह में जहाँ एकाकीपन नहीं है,
पहुँचाते हैं और चिकना-चिकना खाना खाने
के लिए देते हैं। 17 लेकिन तुमने बुरे व्यक्ति[a]
का सा फैसला लिया है। इसलिए इन्साफ़
और सही फ़ैसला तुम से लिपटे रहते हैं।
18 देखो, तुम जलजलाहट से ठट्ठा मत करो, न
प्रायश्चित्त को ज़्यादा बड़ा जान कर रास्ते से
मुड़ो। 19 क्या रोने से या ताकत से तुम्हें मुक्ति[b]
मिलेगी। 20 उस रात की चाहत मत रखो,
जिस में देश-देश के लोग अपनी-अपनी जगह
से हटाए जाते हैं। 21 ध्यान रखना, बेकार के
काम की ओर मत जाओ तुमने तो दुख से
ज़्यादा इसी को चाहा है। 22 देखो, प्रभु अपनी
शक्ति से बड़े-बड़े काम करते हैं, उनकी तरह
सिखाने वाला कौन हो सकता है? 23 उनके
चलने का रास्ता किस ने तय किया है? कौन
उन से कह सकता है कि आपने ठीक नहीं
किया? 24 उनके किए गए कामों की बड़ाई
करना याद रखना, जिन की बड़ाई का गीत
लोग गाते आए हैं 25 सभी लोग उसे ध्यान
से देखते आए हैं। इन्सान उस दूर से देखता

[a] **36.17** अविश्वासी [b] **36.19** आज़ादी

है 26 देखो, प्रभु महान और हमारी समझ से
परे हैं उनके वर्ष की गिनती नहीं की जा
सकती है। 27 क्योंकि वह पानी की बूंदें ऊपर
को खींच लेते हैं। वे कुहरे से बरसात होकर
टपकती हैं। 28 वे ऊँचे-ऊँचे बादल उण्डेलते
हैं और लोगों के ऊपर भरपूरी से बरसाते हैं।
29 फिर क्या कोई बादलों का फैलना और
उसके मण्डल में का गरजना समझ सकता
है। 30 देखो वह अपनी रोशनी को चारों ओर
फैलाते हैं और समुन्दर की थाह को ढाँपते हैं।
31 क्योंकि वह देश-देश के लोगों का इन्साफ़
इन्हीं से करते हैं और खाने की चीजें भरपूरी
से देते हैं। 32 वह बिजली को अपने हाथ में
लेकर उसे आदेश देते हैं, कि दुश्मन पर गिरे
33 उसकी कड़क यही खबर देती है। जानवर
भी यह दिखाते हैं कि आन्धी आएगी।

37 मेरा मन इस बात पर काँप उठता है
और अपनी जगह से उछल पड़ता
है। 2 उनके बोलने को सुनो 3 वह उसे पूरे
आकाश के नीचे और अपनी बिजली को
पृथ्वी के अन्त तक भेजते हैं। 4 उसके पीछे
गरजने की आवाज़ सुनायी देती है और वह
अपनी शक्तिशाली आवाज़ से गरजते हैं। जब
उन का शब्द सुनाई देता है, तब बिजली
लगातार चमकने लगती है। 5 प्रभु गरज कर
अपनी आवाज़ अजीब रीति से सुनाते हैं वह
ऐसे बड़े काम करते हैं, जिन्हें हम समझ नहीं
सकते। 6 वह बर्फ़ को आज्ञा देते हैं कि पृथ्वी
पर गिरे। इसी तरह वर्षा और मूसलाधार
बरसात को। 7 वह सभी इन्सानों के हाथ पर
मुहर कर देते हैं, जिस से सभी मनुष्य उन्हें
पहचानें। 8 तब जंगल के जानवर गुफ़ाओं में
चले जाते और अपनी-अपनी मांदों में रहते
हैं। 9 दक्षिण दिशा से बवण्डर और उत्तर की
हवाओं से जाड़ा आता है। 10 प्रभु की सांस
की फूँक से बर्फ़ पड़ती है, तब तालाबों का
पाट जम जाता है। 11 फिर वह घटाओं को
पानी से लादते हैं। वह अपनी बिजली से भरी
हुई रोशनी का बादल दूर तक फैलाते हैं 12 वे
उनकी बुद्धि के कारण इधर-उधर डोलते हैं।
इसलिए कि वह जो हुक्म दें, उसके हिसाब
से वे करें। 13 चाहे अनुशासन देने के लिए या
अपनी पृथ्वी की भलाई के लिए या लोगों
पर दया करने वह उसे भेजें 14 हे अय्यूब!
इस पर ध्यान दो चुपचाप खड़े रह कर उनके
अजीब[a] कामों पर विचार करो 15 क्या तुम्हें
मालूम है कि प्रभु अपने बादलों को आदेश
क्यों देते हैं और बिजली क्यों चमकाते हैं?
16 क्या तुम घटाओं को तौलना या प्रभु के
आश्चर्य के काम जानते हो? 17 जब पृथ्वी पर
दक्षिणी हवा ही के कारण सन्नाटा छा जाता
है तब तुम्हारे कपड़े गर्म क्यों हो जाते हैं?
18 क्या तुम उनके साथ मिल कर आकाश
मण्डल को तान सकते हो, जो ढाले हुए
शीशे की तरह मज़बूत है? 19 तुम हमें यह
सिखाओ कि उस से क्या कहना चाहिए,
क्योंकि अन्धेरा होने की वजह से हम ठीक से
कुछ कह नहीं सकते 20 क्या उनको बताया
जाना चाहिए, कि मैं कुछ कहना चाहता हूँ?
क्या ऐसा कोई है, जो अपनी बर्बादी चाहता
हो? 21 अभी तो आकाशमण्डल की बड़ी
रोशनी देखी नहीं जाती, जब हवा चल कर
उसे शुद्ध करती है, 22 उत्तर दिशा से सुनहली
रोशनी आती है, प्रभु डर के लायक तेज से
सिंगार किए हुए हैं 23 प्रभु बहुत ताकतवर
हैं। हम पूरी तरह से उन्हें समझ नहीं सकते
हैं। वह इन्साफ़ और पूरी सच्चाई को छोड़
निर्दयता नहीं कर सकते हैं। 24 इसीलिए सही
चरित्र वाले उनकी इज़्ज़त करते हैं और जो

[a] **37.14** बड़े

अपनी निगाह में अक्लमन्द हैं, उन पर प्रभु
दृष्टि तक नहीं डालते।

38 प्रभु ने आँधी में से अय्यूब को यह
जवाब दिया, 2 "यह है कौन जो
नासमझी की बातें कर रहा है? 3 एक आदमी
की तरह अपनी कमर कसो, क्योंकि मैं तुम
से कुछ सवाल करूँगा और तुम मुझे जवाब
दो। 4 जब मैंने इस पृथ्वी की नेंव डाली थी,
उस वक्त तुम कहाँ थे? यदि तुम बुद्धिमान हो
तो मुझे उत्तर दो। 5 उसको नापा किस ने है,
क्या तुम्हें मालूम है? किस ने नाप की डोरी
इस्तेमाल की है? 6 किस चीज़ पर उसकी नेंव
रखी गई है या सिरे का पत्थर लगने वाला
कौन है ? 7 जिस समय सुबह के तारे एक
साथ मिल कर गाया करते थे और प्रभु के
सभी बेटे धन्यवाद-स्तुति करते थे। 8 फिर
जब समुन्दर ऐसा फूट निकला, तब किस ने
दरवाज़े बन्द कर उसे रोका 9 जब कि मैंने
उसे बादल पहनाया और अन्धेरे में लपेट
दिया? 10 और उसकी एक सीमा बान्ध दी
और यह कह कर बेंड़े और दरवाज़े लगा दिए
कि 11 यहीं तक आओ, आगे न बढ़ो, तुम्हारी
उमड़ने वाली लहरें यही रूक जाएँ। 12 क्या
तुमने कभी प्रातःकाल को आदेश दिया और
पौ को उसकी जगह बतलायी, 13 ताकि वह
पृथ्वी की छोरों को अपने कब्ज़े में रखे,
और बुरे लोग उस में से झाड़ दिए जाएँ?
14 वह ऐसा बदलता है जैसे मोहर के नीचे
चिकनी मिट्टी बदलती है और सभी वस्तुएँ
मानो कपड़े पहने दिखाई देती हैं। 15 दुष्टों से
उनकी रोशनी रोक ली जाती है और उनकी
बढ़ाई हुई बाँह तोड़ दी जाती है। 16 क्या तुम
कभी समुन्दर के सोतों तक पहुँच पाए हो,
या गहरे सागर की तह में कभी चले हो ?
17 क्या मौत के दरवाज़े तुम पर प्रगट हुए,
क्या तुम गहरे अन्धेरे के दरवाजों को कभी
देख सके हो? 18 पृथ्वी की चौड़ाई को क्या
तुमने पूरी तरह से समझा है ? यदि ये सब
ज्ञान तुम्हें है, तो बतलाओ 19 उजियाले के
घर का रास्ता कहाँ है और अन्धेरे की जगह
कहाँ है? 20 क्या तुम उसकी सरहद तक हटा
सकते हो? और उसके घर की डगर पहचान
लोगे ? 21 हो सकता है, यह सब तुम जानते
हो, क्योंकि तुम तो उस समय पैदा हुए और
तुम्हारी उम्र बहुत ज़्यादा है। 22 क्या तुम कभी
बर्फ़ के भण्डार में बैठे हो? या कभी ओलों के
भण्डार को देखा है? 23 जिस को मैंने मुसीबत
के समय और युद्ध के दिन के लिए रखा
है। 24 किस रास्ते से रोशनी फैलायी जाती
है? या पृथ्वी पर पुरवाई बहाई जाती है?
25 भारी वर्षा के लिए नाले कौन बनाता है
और कड़कने वाली बिजली के लिए रास्ता
किसने बनाया है? 26 ताकि सूखे देश में और
जंगल में जहाँ लोग नहीं रहते हैं, बरसात
से, 27 उजाड़ देश को सींचे और हरी घास
उगाए। 28 क्या बारिश का कोई पिता है,
ओस कौन देता है? 29 किस के गर्भ से बर्फ़
निकलती है और आकाश से गिरने वाले पाले
को कौन बनाता है? 30 पानी पत्थर की तरह
सख्त हो जाता है। आकाश से गिरे पाले को
कौन पैदा करता है? 31 क्या तुम कचपचिया
का गुच्छा गूँथ सकते हो या मृगशिरा के
बन्धन खोल सकते हो? 32 क्या तुम राशियों
को ठीक-ठीक समय पर उदय कर सकते
हो? या सप्तर्षि को साथियों सहित लिए चल
सकते है? 33 क्या तुम आकाशमण्डल की
विधियाँ जानते और पृथ्वी पर उनका हक
ठहरा सकते हो? 34 क्या तुम्हारी आवाज़
बादलों तक पहुँच सकती है, ताकि बहुत
पानी बरस कर तुम्हें छिपा ले? 35 क्या तुम
बिजली को आदेश दे सकते हो, कि वह

चली जाए और तुम से कहे कि मैं हाज़िर हूँ? 36 मन में समझ डालने वाला कौन है,
समझने के योग्य कौन बनाता है? 37 बादलों
को गिन कौन सकता है? आकाश के कुप्पों
को उण्डेल कौन सकता है, 38 जब धूल जम
जाती है और ढेले एक दूसरे से सट जाते हैं
? 39 क्या तुम सिंहनी के लिए शिकार कर
सकते हो? जिस से जवान शेरों की भूख मिट
सके? 40 जब वे मांद में बैठे हों या कही छिप
कर बैठे हों। 41 कौवे के बच्चों को खाना कौन
देता है जब वे बिना खाने के उड़ते फिरते प्रभु
को पुकारते हैं?

39 क्या तुम्हें पहाड़ की जंगली
बकरियों के बच्चे देने का समय
मालूम है? हिरणियों के बियाने के समय
क्या तुम देखते हो? 2 क्या उनके महीने तुम
गिन सकते हो? उनके बियाने का समय क्या
तुम्हें मालूम है, 3 जब वे बैठ कर बच्चों को
जन्म देती हैं और अपने कष्ट से छूट जाती
हैं? 4 उनके बच्चे तन्दरुस्त होकर मैदान में
बढ़ते जाते हैं। वे जाने के बाद लौटते नहीं
5 कौन बनैले गदहों को आज़ाद करता है,
उनके बन्धनों को किस ने खोला है? 6 उस
का घर मैंने सूखे देश को, और उस का
घर लोनिया ज़मीन को ठहराया है। 7 वह
नगर के शोर-शराबे पर हँसता और हाँकने
वाले की हाँक सुनता भी नहीं 8 पहाड़ों पर
जो कुछ मिलता है, उसे वह चरता है और
सभी तरह की हरियाली ढूँढता है। 9 क्या
जंगली सांड तुम्हारा काम करना चाहेगा?
क्या वह तुम्हारी चरनी के पास होगा?
10 क्या जंगली सांड को रस्से से बांध कर
खेत की रेघारियों में चला सकते हो? क्या
वह नालों में तुम्हारे पीछे पीछे हेंगा फेरेगा?
11 क्या तुम उसकी बड़ी ताकत के कारण
उस पर भरोसा रखोगे? या जो तुम्हारा काम
मेहनत का है, उसे तुम उनके ज़िम्में डाल
दोगे? 12 क्या तुम उस पर विश्वास करोगे,
कि वह तुम्हारा अन्न घर ले आए और वह
तुम्हारे खलिहान का अनाज इकट्ठा करे?
13 अपने पँखों को शुतुरमुर्ग खुशी से फैलाता
है, लेकिन क्या ये पंख प्रेम को दिखाते हैं?
14 वह[a] अपने अण्डे ज़मीन पर छोड़ देती
है। वह मिट्टी में उन्हें गर्म करती है। 15 उसे
इस बात का ध्यान नहीं रहता कि कोई
उन्हें पैर से कुचल डालेगा या कोई जंगली
जानवर बर्बाद कर डालेगा। 16 अपने बच्चों
के साथ वह ऐसी कठोरता से पेश आती
है, मानो वे उसके हैं हीं नहीं। हांलाकि
उसकी पीड़ा बेकार ही की होती है, तौभी
वह चिन्ता नहीं करती है। 17 क्योंकि प्रभु ने
उन्हें बेअक्ल बनाया है। समझने की ताकत
उसमें नहीं है। 18 जिस समय वह सीधी
खड़ी होकर अपने पँख फैलाती है, तब
वह घोड़े और घुड़सवार दोनों ही को कुछ
नहीं समझती है। 19 क्या घोड़े को तुमने
ताकत दी है? उसके गले में अयाल को
तुमने जमाया है? 20 टिड्डी की तरह उछलने
के लिए क्या उसे तुमने ताकत दी है? उसके
फुँकारने की आवाज़ डरा देती है। 21 तराई
में वह टाप मारता है और अपनी ताकत
से खुश होता है। हथियारबन्द सैनिक का
मुकाबला करने के लिए वह निकल पड़ता
है। 22 डर वाली बात पर उसे हँसी आती है
और वह घबराता नहीं है। तलवार के डर से
वह पीछे भी नहीं हटता है। 23 तर्कश और
चमकता हुआ सांग और भाला उस पर
आवाज़ करता है। 24 वह जलन और गुस्से
के कारण ज़मीन को निगल जाता है। जब

[a] **39.14** मादा शुतुरमुर्ग

नरसिंगे[a] की आवाज़ सुनाई देती है, तब वह
रूकता नहीं है। 25 जब-जब नरसिंगा बजता
है, तब-तब वह हिनहिनाता है। लड़ाई और
अफ़सरों की ललकार और जय-जयकार
को दूर से भांप लेता है। 26 क्या तुम्हारे
समझाने से बाज़ उड़ता है, और दक्षिण की
ओर उड़ने के लिए अपने पंख फैलाता है?
27 क्या उकाब तुम्हारे आदेश देने से ऊपर
चढ़ जाता है? और ऊँची जगह पर अपना
घोंसला बनाता है? 28 वह चट्टान पर रहता
है और चोटी पर बसेरा करता है। 29 वह
दूर तक देख सकता है। वहीं से वह अपने
शिकार को देख सकता है। 30 उसके बच्चे
भी खून चूसते हैं और जहाँ मारे हुए लोग
होते हैं वहाँ वह भी होता है।

40 फिर प्रभु ने अय्यूब से कहा,
2 "बकवास करने वाला क्या प्रभु से
झगड़ा कर सकता है? जो प्रभु से तर्क-वितर्क
करता है वही इसका जवाब दे।" 3 तब
अय्यूब ने प्रभु को जवाब दिया, 4 "देखिए,
मैं छोटा हूँ मैं क्या जवाब दे सकता हूँ।
मेरी उँगली दाँत तले दबी है। 5 एक बार
मैंने कह दिया, लेकिन अब न कहूँगा। हाँ,
मैं दो बार कह चुका हूँ, लेकिन अब आगे
नहीं कहना चाहता। 6 तब प्रभु ने अय्यूब
को आँधी में से जवाब दिया। 7 एक आदमी
की तरह अपनी कमर कस लो। मैं तुम से
सवाल करूँगा, तुम जवाब दो। 8 क्या मेरे
द्वारा किए इन्साफ़ को भी तुम रद्द करोगे।
खुद बेदाग ठहरने की कश-म-कश में क्या
तुम मुझ पर आरोप लगाओगे। 9 क्या प्रभु की
तरह तुम्हारी ताकत है? क्या तुम उसकी तरह
आवाज़ से गरज सकते हो? 10 अपने आप
को महिमा और प्रताप से संवारो, ऐश्वर्य और
तेज के कपड़े पहनो। 11 तुम्हारे बड़े गुस्से
को बहा दो। जिस घमण्डी को भी देखते हो,
उसे नीचा कर दो। 12 हर एक घमण्डी को
नीचा कर दो। जहाँ कहीं दुष्ट दिखें, उन्हें गिरा
दो। 13 सभी को एक साथ मिट्टी में मिला दो।
गुप्त जगह में उनके मुँह बान्ध दो। 14 तब मैं
भी तुम्हारे बारे में मान जाऊँगा, कि तुम्हारा
दाहिना हाथ छुड़ा सकता है। 15 उस जलगज
को देखो, जिस को मैंने तुम्हारे साथ बनाया
है। वह बैल की तरह घास खाता है। 16 देखो
उसकी कमर में बल है और उसके पेट की
मांसपेशियों में उसकी शक्ति। 17 वह अपनी
पूँछ को देवदार की तरह हिलाता है। उसकी
जांघों की नसें एक दूसरे से मिली हुई हैं।
18 उसकी हड्डियाँ मानो पीतल की नालियाँ
हैं। उसकी पसलियाँ लोहे के बेड़े की तरह
हैं 19 वह प्रभु का खास काम है। जो उस का
बनाने वाला हो। उसके पास तलवार लेकर
आए। 20 ज़रूर पहाड़ों पर उस का खाना[b]
मिलता है। जहाँ दूसरे सभी जंगल जानवर
खेलते हैं। 21 वह छतनार के पेड़ों के नीचे
नरकटों की आड़ में और कीचड़ पर लेटा
करता है। 22 छतनार पेड़ उस पर छाया करते
हैं, वह नाले के बेंत के पेड़ों से घिरा रहता
है। 23 नदी में बाढ़ आने पर भी उसे किसी
तरह का डर न लगेगा। चाहे यरदन बढ़ कर
उसके मुँह तक आ जाए, वह घबराएगा नहीं।
24 जब वह बहुत सावधान हो, तब क्या उसे
कोई पकड़ पाएगा? या फन्दा लगा कर उसे
वश में कर पाएगा?

41 फिर तुम क्या लिब्यातान या मगर
को बंसी से खींच सकते हो? या
डोरी से उसकी जीभ दबा सकते हो? 2 क्या
तुम उसकी नाक में नकेल लगा सकते हो

[a] **39.24** बिगुल [b] **40.20** चारा

या उस का जबड़ा कील से बेध सकते हो?
3 क्या वह तुम्हारी दोहाई देगा? या , तुम से
मीठी-मीठी बातें बोलेगा। 4 क्या वह तुम से
वाचा बान्धेगा कि वह हमेशा तुम्हारा बना
रहे? 5 क्या तुम उस से इस तरह खेलोगे, जैसे
चिड़िया से? अपनी बेटियों का जी बहलाने
के लिए क्या उनको बान्ध कर रखोगे? 6 क्या
मछुओं के दल उसे बिकाऊ माल समझेंगे?
क्या वह उसे व्यापारियों में बाँट देंगे? 7 क्या
तुम उसकी खाल भाले से, या उस का सिर
मछुवे के तिरशूलों से भर सकते हो? 8 तुम
उस पर अपना हाथ ही रखो तो लड़ाई को
कभी भूलोगे नहीं और भविष्य में ऐसा कभी
भी नहीं करोगे। 9 देखो, उसे पकड़ने की
उम्मीद बेकार है। उसके देखने ही से मन टूट
जाता है 10 इतनी हिम्मत किसी में नहीं, जो
उसे भड़का सके, ऐसा भी कोई नहीं, जो मेरे
साम्हने ठहर सकता हो। 11 मुझे पहले किस
ने दिया है कि उसके बदले में मुझे देना है।
देखो जो कुछ इस दुनिया में है, वह सब मेरा
है। 12 मैं उसके अंगों के बारे में, उसकी बड़ी
ताकत और उसकी बनावट की खूबसूरती
के बारे में खामोश न रहूँगा। 13 उसके ऊपर
के पहरावे को कौन उतार पाएगा? उसके
दाँतों की दोनों लाईनों के अर्थात जबड़ों के
बीच कौन आएगा? 14 कौन उसके मुँह के
दोनों दरवाज़ों को खोल पाएगा? उसके दाँत
चारों ओर से डरावने हैं 15 उसके छिलकों की
रेखाएँ घमण्ड का कारण हैं, जैसे कि कड़ी
मोहर से बन्द किए हुए हों। 16 वे एक दूसरे से
इस तरह जुड़े हुए हैं, कि उस में हवा भी नहीं
टिक सकती। 17 वे आपस में मिले हुए और
ऐसे सटे हुए हैं, कि अलग अलग भी नहीं हो
सकती। 18 उनके छींकने से रोशनी चमकती
है, और उनकी आँखें सुबह की पलकों की
तरह हैं। 19 उनके मुँह से जलते हुए पलीते
और आग की चिंगारियाँ छूटती हैं। 20 उनकी
नाक से ऐसा धुआँ निकलता है, जैसा खौलते
बर्तन और नरकटों से। 21 उनकी सांस से
कोयले सुलगते, और मुँह से आग की लपट
देखती है। 22 उनकी गर्दन में शक्ति रहती
है,उनके साम्हने डर नाचता है। 23 उनके मांस
पर मांस चढ़ा हुआ है, ऐसा कि वह हिल
भी नहीं सकता. 24 उस का मन पत्थर की
तरह मज़बूत है। वह चक्की के पाट की तरह
मज़बूत है। 25 उसके उठते ही ताकतवर लोग
भी डर जाते हैं। 26 यदि उसके ऊपर कोई
तलवार चलाए , तो वह कुछ भी न कर
पाएगा। भाले बर्छे से भी कुछ न होगा। 27 वह
लोहे के पुआल सा और पीतल को सड़ी
लकड़ी की तरह समझता है। 28 उसे तीर से
भगाया नहीं जा सकता। गोफ़न के पत्थर
उसके लिये भूसे की तरह होते हैं। 29 लाठियाँ
भूसे की तरह जानी जाती हैं। बर्छी के चलने
पर वह हँसता है। 30 उसके निचले हिस्से
तेज़ ठीकरे की तरह हैं,मानो वह कीचड़ पर
हेंगा फेरता हो। 31 वह गहरे पानी को हंडे
की तरह मथता है, उसकी वजह से नील
नदी मरहम की हांडी की तरह हो जाती है।
32 वह अपने पीछे चमकीली लीक छोड़ देता
है।गहरा पानी सफ़ेद दिखाई देने लगता है।
33 दुनिया में उसकी तरह और कोई नहीं है,
जिसे इतना निडर स्वभाव का बनाया गया
हो। 34 जो कुछ ऊँचा है, उसे वह देखते रहते
हैं। सभी घमण्डियों के वह ऊपर हैं।

42 तब अय्यूब ने प्रभु को जवाब देना
आरम्भ किया, 2 “मुझे मालूम है
कि आप सब कुछ कर सकते हैं, और
आपकी कोई भी तरकीब नाकामयाब नहीं
हो सकती। 3 आप कौन हैं, कि ज्ञान बगैर
अपनी योजना पर को छिपाए रहते हैं। मैंने

वह सब कह डाला जिस की समझ मुझे नहीं
थी। मेरा मतलब उन बातों से है, जो मुश्किल
और समझ के बाहर हैं। 4 मेरी बिनती है कि
जो मैं कहना चाह रहा हूँ, आप सुनिये। मैं
सवाल करता चाहता हूँ, कृपया मुझे उत्तर दें।
5 कानों से मैंने आपकी सुनी है लेकिन मैं अब
देख पा रहा हूँ। 6 अब मुझे खुद से नफ़रत सी
हो गयी है। मैं मिट्टी और राख में बैठा पछता
रहा हूँ। 7 इन सभी बातें को कह चुकने के
बाद, एलीपज़ से प्रभु ने कहा, “मुझे तुम पर
और तुम्हारे दोनों दोस्तों पर गुस्सा आ रहा
हूँ। मेरे बारे में अय्यूब ने जिस तरह की बातें
की, तुमने नहीं की। 8 इसलिए अब तुम सात
बैल और सात मेंढ़े छाँटकर मेरे दास अय्यूब
के पास ले जाओ। उसे अपने लिए होम बलि
करके चढ़ाओ। फिर वह तुम्हारे लिए मुझ से
बिनती करेगा मैं उसी की बिनती सुनूँगा। यदि
तुम ऐसा नहीं करते हो, तो मैं तुम्हारे साथ
अच्छा व्यवहार न करूँगा। इसलिए कि मेरे
दास अय्यूब की तरह तुमने सही बातें नहीं
की।” 9 यह सुनते ही तेमानी एलीपज़, शूही
बिलदद और नामाती सोपर ने प्रभु के आदेश
के मुताबिक किया और प्रभु ने अय्यूब की
दुआ सुनी। 10 जब अय्यूब ने अपने दोस्तों के
लिए प्रार्थना की, तब प्रभु ने उसके सारे दुखों
को दूर किया। जितना अय्यूब के पास पहले
था, उस का दुगना प्रभु ने उसे दिया। 11 तब
उसके सभी भाई बहनें और जान पहचान के
लोग आए और उसके साथ खाना खाया।
जितनी मुसीबतें उस पर आयीं थी, उन सभी
के लिए शोक मनाया। उन लोगों ने उसे शान्ति
दी और सभी ने एक -एक सिक्का और सोने के
बाली दी। 12 अय्यूब के पुराने दिनों से ज़्यादा
उसे सब कुछ बहुतायत से मिला। उसके
चौदह हज़ार भेड़-बकरियाँ, छैः हज़ार ऊँट,
हज़ार जोड़ी बैल और एक हज़ार गदहियाँ
हो गयीं। 13 उसके सात बेटे और तीन बेटियाँ
हुयीं। 14 उसकी सब से बड़ी बेटी का नाम
यमीमा, दूसरी का कसीआ और तीसरी का
केरेन्हप्पूक था। 15 पूरे देश में इतनी खूबसूरत
लड़कियाँ नहीं थी। अय्यूब ने बेटों के साथ,
इन सभी को भी हिस्सा दिया। 16 इसके बाद
अय्यूब एक सौ चालीस साल तक ज़िन्दा
रहा। उसने चार पीढ़ी तक अपने वंश को
देखा। 17 काफी बूढ़ा होने के बाद उस का
निधन हो गया।

DUSTY SANDALS
All Rights Reserved. www.dustysandals.com